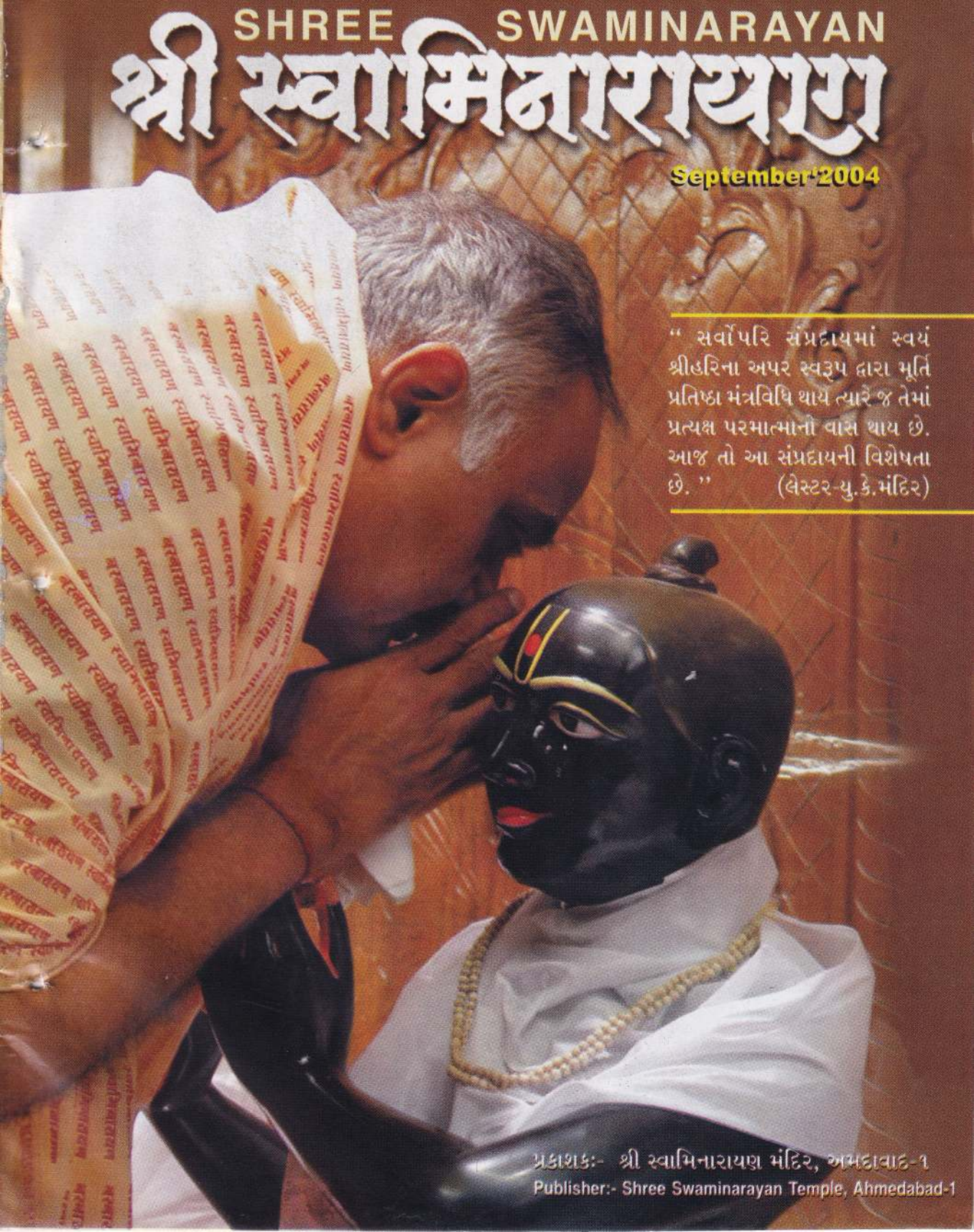
SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

September'2004



" સર્વોપરિ સંપ્રદાયમાં સ્વયં શ્રીહરિના અપર સ્વરૂપ દ્વારા મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મંત્રવિધિ થાય ત્યારે જ તેમાં પ્રત્યક્ષ પરમાત્માનો વાસ થાય છે. આજ તો આ સંપ્રદાયની વિશેષતા છે. " (લેસ્ટર-યુ.કે.મંદિર)

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



अमेरिका की धर्मयात्रा में सत्संग के प्राणप्यारे प.पू. बाल लालजी महाराजने अपनी अमृतमयी वाणी से छोटे-बडे सभी हरिभक्तों को स्तब्ध कर दिये थे।



शिकागो मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ संत हरिभक्तों की पदयात्रा।





शिकागो मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक की आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा हरिभक्तों की विशाल सत्संग सभा।





ऐडिसन में प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में सत्संग सभा।





ह्युस्टन टेक्सास में सत्संग युवा शिबिर में पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्योने स्वयं तैयार किया हुआ गीत गाकर सभी को आनंदित किया।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश २००१-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ सितम्बर -२००४

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्रीदेव पूजा	५
४.	आपका सपना सत्य हो	७
५.	धर्मादा अभियान का श्रीगणेश	११
६.	भगवान की मूर्ति के विषय में मरणभाव की कल्पना नहीं करनी चाहिए	१४
७.	अहमदाबाद मंदिर में पवित्र अधिक मास के उसत्वो की झांकी	१५
८.	बाल वाटिका (१) सरल व्यवहार मन से करना चाहिए	२०
९.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

ज्ञान और प्रकाश की व्यापकता ऐसी है कि उदय होने के साथ ही फैलतने लगती है। जैसे सूर्य को उदय होते ही कितना ही घना जंगल का अंधकार हो वहाँ भी प्रकाश का प्रवेश होजाता है। ठीक इसी तरह परमेश्वर के ज्ञान से आत्यन्तिक मोक्ष देनेवाला ज्ञान सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने मुख से जो धारा बहाई है, आज दुनियां के कोने कोने में फैल गयी है। जिसे शास्त्रों में अनार्यदेश कहा गया है, वहाँ भी ऐसे ज्ञान का प्रकाश फैल गया है। अपने पहमहंस कहते थे कि पत्ते-पत्ते पर "स्वामिनारायण" का नाम गुंजित करना है। वही आज सार्थक हो रहा है। जैसे कि अभी हमारे पूज्यपाद आचार्य महाराजश्रीने ब्रिटन के लेस्टर शहर में अपने शिखरबद्ध मंदिर में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वस्म की प्रतिष्ठा की, तथा सम्पूर्ण ब्रिटन में हरि भक्तों के लिए शिक्षापत्री के आज्ञानुसार उपास्य-सेव्य श्रीहरि के स्वस्म को वहाँ रहने वाले सभी भक्तों के लिए सुलभ करा दिया। जिससे वहाँ के पश्चिम देशों में रहनेवाले भक्तजनों की धन्य भाग्य हो गयी। इसी प्रकार अमेरिका के डिट्रोइट में आगामी १२ अगस्त के शुभदिन विशाल शिखरबद्ध मंदिर में यह समाचार मिलेगा कि तब तक साकार स्वस्म में शास्त्रानुसार तथा भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा रचित शिक्षापत्री के ६२ वें श्लोक के कथनानुसार मोक्षदाता का स्वस्म विराजमान हो चुका रहेगा। इसप्रकार अमेरिका में रहने वाले लाखों हरिभक्तों को साक्षात्कार का लाभ मिलेगा। ऐसे प्रत्यक्ष स्वस्म का साक्षात्कार कराने वाले श्रीहरिके अपर स्वस्म आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजीश्री के चरणों में नत मस्तक होकर प्रणाम करने वाले वहाँ के भक्तजन। इसप्रकार ऐसा दिव्य लाभ हमे भी प्राप्त हो ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अगस्त - २००४

१. अधिक मास के उपलक्ष्य में श्री नरनारायणदेव को केसर स्नान स्व हाथों से ।
प.भ. प्रदीपभाई नंदूभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर गोमतीपुर में पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पारायण कथा की पूर्णाहुती में पदार्पण ।
शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदास की पारायण कथा में पदार्पण, राणीप ।
प.भ. अश्विनुकमार प्रभुदास सोनी के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. विनोदभाई जी. शेलत के यहाँ पदार्पण, ऐलिसब्रीज ।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर में पदार्पण ।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर सत्संग सभा में पदार्पण ।

७. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. मुकुन्दभाई शंभुभाई के यहाँ पदार्पण ।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर अधिकमास पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्म शक्ति में पदार्पण ।
डीवाईन माईक्रोपेक लेबोरेटरी बापुनगर में पदार्पण ।
प.भ. गांड़ाभाई कालिदास के यहाँ घाटलोडिया पदार्पण ।

९. प.भ. विजीतचंद्र शांतिलाल का.प. के यहाँ बालासिनोर पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

१०. प.भ. महेशकुमार आर. मांडलिया के यहाँ पदार्पण ।

विदेश धर्मयात्रा

१२ से २४ ता. श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ए., यु.के.) में मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु पदार्पण तथा इग्लेंड के विल्सडनलेन, वुलवीच, हेरो, ओल्डहोम, एजवेर, स्ट्रेधाम, कार्डिफ, बोल्टन, इस्ट लंडन तथा ब्राईटन अदि मंदिरो में पदार्पण गुरु मंत्र एव सत्संग सभाओं में पदार्पण ।

२४. स्वदेश लंडन से मुंबई होते हुए पदार्पण किये ।

२५. प.भ. संजयकुमार पुलचंदास मोदी के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. भावसार भगवानदास हिंमतलाल द्वारा आयोजित कोन्टेम्परी आर्ट गेलेरी में प्रदर्शन उद्घाटन हेतु पदार्पण ।

२६. कांकरिया मंदिर में हिंडोला उत्सव में पदार्पण ।

२७. प.भ. बचुभाई डाह्याभाई के यहा ँ पदार्पण ।
प.भ. सुरेशभाई बचुभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. गौतमभाई कांतिभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
प.भ. रसिकलाल चंदुलाल, विनोदकुमार के यहाँ पदार्पण ।

२८. प.भ. रमेशभाई परसोत्तमभाई के यहां साहीबाग में पदार्फण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पारायण में पदार्पण ।

२८. प.भ. नटवरभाई वेचरदास पटेल के यहाँ पदार्पण ।
अ.नि.प.भ. हीराभाई जोईताराम पटेल के यहाँ सत्संग सभा में पदार्पण स्वा. मंदिर नारायणपुरा ।

२९. मोरबी गाँव में प.भ. लालजीभाई पटेल के यहाँ स्वागत सिरामिक के उद्घाटन में पदार्पण ।
प.भ. प्रफुल्लभाई डाह्याबाई ठक्कर के यहाँ होमात्मक महापूजा के अवसर परपदार्पण, वस्त्रापुर ।

३१. प.भ. दिनेशभाई मफतलाल पटेल के यहाँ घनश्याम ज्वेलर्स के उद्घाटन हेतु पदार्पण, नरोडा ।
प.भ. बलवंतभाई डी. डोबरिया के यहाँ दुकान उद्घाटन हेतु पदार्पण बापुनगर ।



भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा

अगस्त - २००४

२३. जुलाई से अगस्त २००४ विदेश धर्मयात्रा शिकागो मंदिर पाटोत्सव, ह्युस्टन (टेकसास) सत्संग युवाशिबिर एवं एडिसन न्यूजर्सी तथा फ्लोरिडा में पदार्पण एवं सभाओं का आयोजन सर्वत्र आशीर्वादात्मक कार्यक्रमों में पदार्पण धूम धाम से उत्सव सम्पन्न हुआ ।

लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

इंग्लेन्ड में I.S.S.O. संस्थापित अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने मूर्ति प्रतिष्ठा की तब से सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी है । पहले यहाँ जूआ का अड्डा चलता था । यहाँ अनेक लोगों के जीवन बरबाद होते थे । परंतु सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान जब से यहाँ विराजमान हुए तब से सभी में आनंद की लहर हो गयी है । श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं भावी आचार्य लालजी महाराजश्रीने इस स्थान पर मंदिर बनवाकर अनेको के जीवन को प्रकाशमय बनाया तथा मोक्ष कल्याण के मार्ग का संकल्प किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री संत मंडल के साथ पधार कर यहाँ के सत्संगियों को बल एवं प्रेरणा देते रहते हैं । जिसके दर्शन मात्र से कितने ही नये सत्संगी हुए हैं । मूल सम्प्रदाय की पहचान जब होती है तो लोग दौड़कर यहाँ आते हैं । अब तो स्थिति ऐसा हो गयी है कि मंदिर भी छोटा पडने लगा हैं । यह अपने सत्संग का प्रभाव है ।

ता. १६-८-०४ से २२-८-०४ तक लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर में कथापारायण, विष्णुयाग जैसे धार्मिक कार्यक्रम प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी उपस्थिति में हुए । प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ पू. पी.पी. स्वामी भी आये हुए थे । उन्होने भी सत्संग समाज को अपनी दिव्यवाणी का लाभ दिया था ।

ता. २२-८-०४ को सर्वोपरि श्री बाल घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी । यह विधि प.पू. महाराजश्री के कर कमलों द्वारा वेद विधिसे सम्पन्न की गयी । हमारे इंग्लेन्ड के हरिभक्तों ने दर्शनकर महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया । हरिभक्तों के वरसों का संकल्प महाराजश्री के संकल्प से पूर्ण हो गया । इस प्रकार इंग्लेन्ड में लेस्टर शहर में गुजरातियों के लिये तथा धार्मिक लोगों के लिये मोक्षदेने वाला मंदिरका निर्माण हुआ ।

हरिभक्तों के आनन्द की कोई सीमा न रही । प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ यु.के. के प्रत्येक मंदिर मे पधारकर हरिभक्तों को प्रसन्न करके आशीर्वाद दिये । १२ दिन की धर्मयात्रा परिपूर्ण करके ता. २४-८-०४ को स्वदेश लौट आये ।

- पी.पी. स्वामी जेतलपुर

श्रीदेव पूजा

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारायणभाई पटेल

महाप्रभु श्री स्वामिनारायण के पुनीत चरणों से पावन, गायकवाड महाराजा से सुरक्षित, स.गु. गोपालानंद स्वामी के संस्कारो द्वारा सिञ्चित ऐसा बडोदरा शहर चारो वर्णो के निवास से सुशोभित हो रहा है । राजदरबारों में अनेकों नीति नीयम में अडिग "स्वामिनारायण" के हरिभक्त अपने अग्रस्थान को सुशोभित कर रहे हैं ।

बापूभाई नाम का सरवरिया ब्राह्मण एक कर्तव्य निष्ठ सिपाही के स्म में दरबार में सेवा कार्य कर रहा है । उसे महाराज ने स्वयं प्रतिदिन पूजार्थ एक मूर्ति दी थी । उस मूर्ति की पूजा करने से पूर्व जल भी नही ग्रहण करता था । संयोगवश वह मूर्ति में से "साक्षात्पना" के भाव को भूल गया और मूर्ति का भाव आ गया और अत्यन्त सस्ता हार मूर्ति को पहना दिया ।

भगवान तो मूर्ति में रहकर साक्षात स्म से भक्त भाव को पहचानते है । भगवान ने उसके हार को दूर करते हुए कहा - कि मैं सदैव मूर्ति में प्रत्यक्षस्म से रहता हूँ।

आपी मूर्ति महाराजे एक, पूजी जल लेवी एवी टेक ।
तेने अर्थे लाव्यो एक हार, धरयों मूर्ति ने निरधार ॥
हारा हणवो जोई मूरति, वाख्यो फगावी अडगो अति ॥
पछी बोली छे मूरति एम, हार हणवो चढावे छे केम ।
बीजे वावरे छे बुंद धुन, त्यां तो मोकडु राखे छे मन
त्यारे बापू जोड्या छे हाथ एतो मूल्य ओड़खावी नाथ
धन्य सामथी तमारी स्वामी, आज परचो पाम्यो हूं बहुनामी ।

(भ.चिं.प्र. १४५ कडी ३७-४०)

देशकालादिक के अनुसार अथवा अपने सामार्थ्य के अनुसार पूजा की सामग्री एकत्रित करके प्रभु की पूजा करनी चाहिए । यह उदाहरण केवल बापूभाई का नहीं है, प्रत्येक सत्संगी मात्र को महाराजने स्वयं कहा है, कि "अमारी आपेल" यह जो नरनारायणदेव की मूर्ति है, उसे पूजा के बिना रहने नहीं देना ... (ग.प्र. ४८)

श्रीजी महाराज द्वारा दी हुई उनकी प्रसादी की या उनके अपर स्वस्म धर्मवंशी आचार्यश्री द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति में पाषाणभाव, धातुभाव या कागजभाव की कभी भी कल्पना नहीं करनी चाहीए । उसकी कल्पना से ही अक्षम्य दोष लगता है । महाराज ने जो बात बापुभाई को बताई वह हम पर भी लागू पडती है । भगवान को प्रशन्न न करपाये तो कोपायमान करने का कार्य न करना चाहिए ।

सो बात नी एक वात छे, नव करवो अज्ञाननो लोप ॥
राजी करवानुं रह्युं पुरु, पण न करावीए हरिने कोप ॥

(वचन विधि कडवुं)

श्रीजी महाराजके शब्दों को अक्षरदेह देते हुए स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कहेते है कि

बीजी मूरती ने आ जे मूरति रे, तेमां फेर जाणज्यो अति रे ।
कां जे आ मूरति स्वरश रे, थयो अमारा माटे सरस रे ॥

(पु.प्रकाश प्रकार ४५ कडी १४)

वैष्णव संप्रदाय में पूजाविथि अविभाज्य अंग है । जिससे भक्त को भगवान में प्रेम होता है । श्रीजी महाराजने बाह्य पूजा के साथ मानसिक पूजा की रीति भी बतायी (ग.अं. २३) और कहा की मानसिक तथा बाह्य पूजा का फल भी एक समान है किन्तु वह संपूर्ण श्रद्धा भाव से, देश कालादि के अनुसार, यथाविधि तथा यथा शक्ति से करना चाहिए ।

जिसे महाभारत के अठ्ठारह हजार श्लोक कंठस्थ थे वे मूर्धन्य विद्वान दिनानाथ भट्ट भी प्रभु की प्रार्थना

करते है कि के पुष्पो से विष्णुजी की पूजा नही

न जाने धर्माणामतिगहनकर्तव्यसरणिम्
न शास्त्रं मंत्राणां न च विविधतंत्रागमविधिम् ।
न वा भक्तैः कृत्यं तवचरणपद्मार्चनविधिम्
ततो वन्दे दीनस्तव पदयुगं दंडवदहम् ॥

अलग-अलग धर्म और कर्मो की अति कहन कर्तव्यसरणि, अर्थात् कौनसा धर्म और कौन सा कर्म पालने योग्य है और क्या अयोग्य है। उसके विवेक विचार की दृष्टि मुझ मे नही है। मैं शास्त्रो, मंत्र-तंत्र पुराणो की विधि नही जानता। मैने आपके चरण कमलो का विधिपूर्वक अर्चन-पूजन भी नही किया ऐसा मै आपके चरण कमल में अतिदीन भाव से, मात्र साष्टांग दंडवत करता हूँ। (शरणाष्टक श्लो. ४)

स.गु. श्री शतानंद मुनि स.जी. के पांचवे प्रकरण में सातवे अध्याय में पूजाविधि का उल्लेक करते हुए कहेते है कि -

स्थिर प्रतिमा शालिग्राम तथा बाण लिंगके पूजन में विसर्जन तथा आह्वान नही करना चाहिए। शालीग्राम के पूजन में अक्षत का निषेध है। तुलसी से गणेशजी की पूजा नहीं करनी चाहिए, बिल्वपत्र से सूर्य की पूजा नही करनी चाहिए चंपा से शिवजी की पूजा नही करनी चाहिए, धतूरा के पुष्पो और अकडा करनी चाहिए तुलसी पत्र भी वैधृतियोग, व्यतीपात, मंगलवार, शुक्रवार, रविवार पूर्णिमा, अमावस्या, संक्रांति, एकादशी तथा द्वादशी के दिन नही तोड़ शक्रते। जन्म-मरण सूतक में, प्रातः संध्या तथा शायं संध्या समय पर तथा रात्रि को भी नही तोड शकते। बासी जल पत्र, पुष्प से पूजन नही होता (अगर माली ने अपने घर रात को रख दूसरे दिन लाया हो तो उसमे बासी का दोष नही लगता। किंतु यदि पूजक के घर में पूर्व रात्रि को लाकर रखाहो तो बासी समझा जायेगा। बिल्वपत्र आमला और तुलसीपत्र में बासी का दोष नही है।

आज के भागदौड के जमाने में पढने-सोचने में समझने में या वर्तन में श्रद्धा घटती जा रही है। परंतु हमारे गुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हमारे कल्याण हेतु अथक परीश्रम करते हैं। जिससे देव मंदिरों में विधिवत् पूजा पारंपरिक ढंग से होती रहती है।

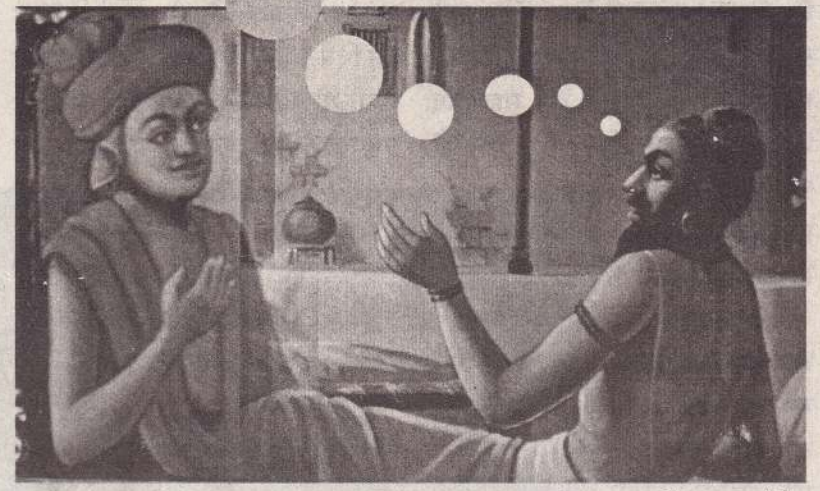
जेतलपुर में श्री रेवती बलदेवजी, हरिकृष्ण महाराज विद्यमान हैं। वहाँ के महन्त स्वामी तथा सन्त, पार्षद मिलकर एक सुंदर आयोजन किये है कि अहमदाबाद प्रातः प्रतिदिन आकर ताजा पुष्प लेजाना और उसी का हार बनाकर भगवान की सेवा पूजा करना। इस कार्य में पद्यपि परीश्रम अधिक है तथापि विधिका लोप नहीं होता। इस क्रिया से स्पष्ट होता है कि भगवान के प्रतिदिन पूजार्थ जो खर्च है २०० दोसौ रुपये का खर्च है इसमे यजमान बनकर सेवा की जा सकती है। जेतलपुर मंदिर में से इस सेवा की पक्की रसीद मिलती है। हमें इसका लाभ प्रत्यक्ष मिलता है चाहे वह प्रसन्नता का हो या विमारी में भी यही हार भेंट में मिलजाता है। अतः इस अवसर का लाभ हमें लेना ही चाहिए।

भगवान श्री नरनारायणदेव कालुपुर मंदिर में इस प्रकार की सेवा वर्षो से चली आ रही है। उसी का परिणामहै कि आज हम भगवान को सुन्दर नये फूलों के बने हार धारण किये हुए दर्शन करते है, यही हमारी अहोभाग्य है।

चाहे जैसे भी किसी नें हारा हो लेकिन भगवान को हार पहनावे तो उसकी हार जीत में बदल जायेगी। इसमें लेश मात्र संदेह नहीं। प्रभु को हार अर्पण करने में कभी हार मत मानियेगा, उसी में आपकी जीत है।

आपका सपना. सत्य हो

- चन्द्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)



सत्ता, शक्ति तथा मान मिलने पर व्यक्ति की पहचान हो जाती है। एक विद्वान ने कहा है कि - जिस मनुष्य की मानवता मापना हो तो उसे सत्ता दे दो। दैवी होगा तो दीनता तथा नम्रता का व्यवहार करेगा । दु:ष्ट होगा तो - अहंकारी अभिमानी अक्कड व्यवहार करेगा । मनुष्य सत्ता तथा सन्मान के लिए कितना दौड़धूप करता है। मनुष्य के जीवन में झांककर देखो तो पताचलेगा कि उसके मूल में अहंकार अभिमान ही भरा हुआ है। अहंकार - अभिमान निर्मूल होने पर ही विनम्रता तथा ईश्वरत्व का उदय होता है।

रामानंद स्वामी के शिष्य मंडल में दो पात्र थे। दोनो अपने लिये प्रभावी थे । एक थे स्वामी रामदासजी दूसरे रघुनाथदासजी। दोनो की वाणी विचार विलक्षण था । रामदासजी सरल हृदय पूर्ण रूप से सज्जन, गुरुकृपा पात्र थे। रघुनाथदासजी बहुत महत्वाकांक्षी तथा सत्ता मुखी थे। सेवकों में वरिष्ट होने से गुरुकी गद्दी प्राप्त करने की इच्छा रखते थे। खुद पढे लिखे थे। व्यक्तित्व उत्तम था । बत्तीस ब्रह्मविद्या षट्चक्र भेदन समाधि साधना इत्यादि के जानकार थे। वाक्छटा अलौकिक थी । परंतु उनकी कुंडली अभिशापित थी । गुरु रामानंद के ऐश्वर्य, प्रताप के नीचे दबकर रहना पड़ता था ।

रामानंद स्वामीने अपनी गद्दी जब सहजानंद स्वामी को दिया तो उनके विचारों पर पानी फिर गया । रामानंद स्वामी के सामने खुलकर विरोध तो नहीं किया लेकिन व्यवहार बदल गया। गुरु के धाम में जाने के बाद स्वतंत्र व्यवहार करने लगे। उद्धव सम्प्रदाय कें हमीं हकदार हैं ऐसे हरिभक्त समाज में कहने लगे । इस प्रकार उनकी हरकत देखकर सहजानंद स्वामीने उन्हे विमुख कर दिया । वे अलग होकर अपनी वाक्छटा द्वारा सभी को अपनी तरफ खींचने लगे ।

ऐसे में एक ऐसा प्रसंग हुआ। साधु रामदास अहमदाबाद में थे । रघुनाथदासभी अहमदाबाद में थे। एक दिन रघुनाथदास रामदास को मिलने आये । उनका मिलना भेदभरा हुआ था। गुरुके प्रमुख शिष्य होने के कारण रामदासजी बड़े आदर के साथ कुशल समाचार पूछे। इसके बाद रघुनाथदासने सत्यभा शी प्रस्ताव रखा ।

रामदासजी ! आप मेरे गुरुभाई हैं। गुरु के अनुरूप आपका विचार है। गुरु के कृपापात्र हैं। पूजनीय हैं। अनेक जीवों का कल्याण करने वाले है । इसलिए आपके पास सत्संग के हित की बात करने आये हैं । अपने गुरु रामानंद स्वामी हम दोनों को ही मुख्य मानते थे । फिर भी किस कारण से अपनी गद्दी पर आचार्य के रूप में नये आगन्तुक सहजानंद स्वामी को बैठा दिये। जिसे सम्प्रदाय की नीति, रीति, व्यवहार कुछ पता ही नहीं है। गुरु के सिद्धांतानुसार उपदेश नही करते । आचार्य होने पर भी उसमें कोई गम्भीरता नहीं है । हमारे जैसे वृद्धों की बात मानता नहीं। हरिभक्तों को गलत मार्ग पर लेजा रहा है। यह सब आपतो जानते ही हैं । परन्तु अकेले होने के कारण बोल सकते नहीं है। आज हम दोनों गुरु की प्रसन्नता के लिए एक होकर उसकी प्रवृत्ति को रोकेगे। यदि ऐसा नहीं करेंगे

तो रामानंद स्वामी द्वारा स्थापित उद्धव सम्प्रदाय छिन्नभिन्न हो जायेगा । हम दोनो एक होकर गुजरात, कच्छ, सौराष्ट्र के हरिभक्तो को सही दिशा देंगे । यही हमारा कर्तव्य है । ऐसा रामानंद स्वामी दर्शन देकर प्रेरणा देते है । सहजानंद जैसे मुझे निकाल दिया ऐसे आपको भी निकला देगा । इसलिए इस पर कुछ विचार कीजिये ।

रामदासजी सत्य वक्ता थे । किसी की डर उन्हे नहीं थी । डभाड के यज्ञ प्रसंग पर लाखों लोग एकत्रित थे । उस प्रसंग पर सहजानंद स्वामी विशेष प्रकार के उच्च आसन पर शयन करते थे । एकरात्रि वे सोये हुए थे उस रात्रि अमूल्य रत्नो से जडित वस्त्र धारण किये थे । चारों तरफ हथियार धारी पार्षद रक्षा कर रहे थे । फिर भी एक सूरती आदमी बड़ी चतुरता के साथ मंच पर पहुंचकर छाती पर हाथ रखदिया । लेकिन श्रीजी महाराज सजग होकर खड़े हो गये ।

पहरा देने वाला कौन है ? आवाज सुनकर सभी चौकीदार हाजिर हो गये । हरिभक्त, सन्त सभी दौड़कर आ गये । क्या है प्रभो ?

देखो ! आप सभी के रहते हुए यहाँ आ गया हैं । आपलोग मुझे मरवाना चाहते हैं क्या ? सर्वज्ञाता श्रीहरि अमूल्य रत्नो को वस्त्रों को उतार दिये और केवल एकधोती पहन कर प्रचंड ठन्डी में बैठ गये । अलैया खाचर स्ई की रजाई ओढाये तो भी उसे हाथ से तिस्कृत कर दिये । सभी ने भूल के लिये मांफी मांगी तो भी शान्त नहीं हुए । बाद में रामदासजी रजाई लेकर आगे आये और



ओढाये तो ओढलिये और शान्त होकर सो गये ।

अपनी बात पूरी करके रघुनाथदास रामदासजी की तरफ देख रहे थे । रामादासजीने बड़े प्रेम से समझाते हुए कहा कि जब रामानंद स्वामी जेतपुर में सहजानंद स्वामी को गद्दी दे रहे थे तो सभी को निर्देश करते हुए कहा था कि आज से सभी को इन्ही की आज्ञा में रहना होगा । इनकी सेवा करनी होगी । जो इनके कहे में वर्तन नहीं करे तो वचन द्रोह कहा जायेगा । गुरुद्रोह कहा जायेगा । अब आपके कहने से गुरु के वचन पर पैर रखें ? पगड़ी के लिये मस्तक कटवा दूं ? गुरुद्रोह तथा सहजानंद स्वामी की उपेक्षा आपके लिए घातक होगी ।

रघुनाथदास क्रोधावेश में अपशब्दों की बौछार के साथ बाहर निकल गये । रामदासजी श्रीहरि को एक पत्र लिखे और गणपत नाम वाले ब्राह्मण के साथ भेंजे । श्रीजी महाराज जेतपुर गाँव में मुणुवाला के यहाँ विराजमान थे । गणपतराम पत्र तथा पेंडा का पैकेट जितेन्द्र जगदीश्वर के सामने रख कर दण्डवत प्रणाम किया । पत्र वांचते हुए श्रीहरि हंस रहे थे । और मुक्तमुनि की तरफ देखते हुए बोले । रामदासजी ने पत्र लिखा है कि अहमदाबाद में उपद्रव होने की सम्भावना है ।

जानने के योग्य यह है कि रघुनाथदास मेरे पास आया था । गुरु रामानंद की सम्पूर्ण बात करके गया और कहा कि मैं गुरुका पट्ट शिष्य हूँ मैं ही गद्दी का अधिकारी हूँ । फिर भी गुरु ने सहजानंद को गद्दी पर बैठाया जिसने मुझे विमुख कर दिया है । और हमें अपने साथ एक होकर रामानंद स्वामी द्वारा स्थापित परम्परा की रक्षा की बात कर रहा था । उद्धव सम्प्रदाय की रक्षा

करना ही हम दोनों कर्तव्य है इस प्रकार अनेको बात करके गया है ।

मैंने उसकी इन सभी बातों को नहीं माना तो क्रोधित होकर चला गया । यहाँ के अगल बगल के हरिभक्तों में भ्रामक प्रचार कर रहा है । परिणाम स्वरूप बहुतायत में लोग उसके अनुकूल हो गये है । ऐसा होगा तो सत्संग विखर जायेगा । अतिशीघ्र आप यहाँ पधारें सभी आपके दर्शन की इच्छा रखते हैं ।

पत्र सुनकर मुक्त मुनि से कहा, गुजरात के हरि भक्तों के लिए एक पत्र लिखकर भेंज देते हैं । पत्र में ऐसा लिँखिये कि रामानंद स्वामी के जो भी शिष्य हैं वे सभी लोग रामदासजी स्वामी की बात मानेंगे । वे जैसा कहें वैसा ही सभी को करना है । रामदासजी की आज्ञा में जो वर्तन नहीं करेंगे उन्हे सत्संग के बाहर समझा जायेगा ।

ब्राह्मण को बुलाकर साधु-विप्र पूजक भगवान ने गणपतराम की पीठ सहलाकर सभी समाचार पूछा । बाद में कहे कि यह पत्र आप रामदास स्वमी को देना । यह प्रसाद भी लेजाइये । हम थोड़े समय में अहमदाबाद आनेवाले हैं । रामदासजी को कहना कि गुरुरामानंद स्वामी आज भी सत्संग में विचरण करते है । काल, कर्म, माया, यमदूत उनके डर से दूर रहते हैं । उनका विश्वास रखना । सत्संग में जो भी सुख दुःख आता है वह सभी उन्ही की इच्छा से । अतः आत्मस्थ में रहकर सभी निर्भय बने । सभी को हमारा जयनारायण ।

गणपतराम को यह समझ नहीं आया इसलिये उन्होंने कहा हे प्रभो ? हमारी बुद्धि थोड़ी है । आप जो कहे वह सब याद नहीं रहेगा । इस लिए पत्र में लिख कर देदीजिए । महाराज दूसरापत्र लिखवाकर दिये ।

जेतपुर से श्रीहरि मछिआव में चार पांच दिन रुके । यह समाचार रामदासजी को मिला कि दर्शन हेतु मछिआव पहुंच



गये । साधु प्रिय भगवान बाहों में भरकर भेंटे और कुशल क्षेम पूछे ।

आपकापत्र हमें जेतपुर में मिलाथा, जिसका उत्तर आपको दिया था अब यहाँ हाल समाचार कहों ।

हे प्रभु ! आपके पत्र से सभी हरिभक्त तथा संत प्रसन्न हुए हैं । आपने जो रीति बताई है वह सभी संत कर रहे हैं । मुकुन्द वर्णी दूध से बना भोजन लाये तो भगवान ने कहा रामदासजी को भी एक थाली ले आइये ।

हे महाप्रभों ! हमें ऐसी थाली की जरुरत नहीं हैं । आपके प्रसाद की इच्छा है । स्वामी ? आप रामानंद स्वामी के कृपापात्र हैं । ज्ञानी हैं । हमसे बड़े हैं । गुरु समान हैं । आपको अपनी थाली में से प्रसाद दूं यह ठीक नहीं ।

रामानंद स्वामीभी आपके प्रसाद की इच्छा करते थे । तो आज यह अवसर - मिला है । हे धर्मपुत्र श्रीहरि । श्रीनगर में एक बार हमें स्वप्न आया, चरोतर के एक छोटे से गाँव में बड़ा उत्सव हो रहा हैं । लाखो हरिभक्त एकत्रित हैं ।

आपके दोनो भाई परिवार के साथ आये हुए हैं । वे उत्तम प्रकार का भोजन बनाकर ले आये और आप भोजन करने बैठे । उस थाल में से मुझे आप प्रसाद दिये । वह प्रसाद हम तथा मुक्त मुनि खाये । इस प्रकार धर्मकुल के भोग का प्रसाद का लाभ हमें मिला ।

आपका सपना सत्य हो । अगल बगल के सभी हरिभक्त एक साथ बोलने लगे धर्मपिता - भक्तिमाता का सम्पूर्ण परिवार यहाँ आवे ऐसा चाहते हैं । श्रीहरिने कहा हमारा परिवार तो बहुत दूर है । इस समय मेरे मन मे ऐसा कुछ नहीं है । लेकिन आप सभी का स्वप्न साकार अवश्य होगा । ऐसा कहते हुए भक्तिनंदन खड़े हुए और कमर में डुपट्टा बांधकर संतो की पंक्ति में भोजन परसने लगे ।

संवत १८५९ में यह प्रसंग हुआ था । उस समय श्रीहरि की अवस्था २२ वर्ष की थी । धर्मपरिवार में से सर्व प्रथम इच्छारामभाई लोया गाँव में शाकोत्सव के अवसर पर आये । करीब डेढ दशक का समय बीत गया और रामदासजी का स्वप्न साकार हुआ ।



श्री नरनारायणदेव के स्व मंदिर में (चौखट के अगल-बगल) संगमरमर द्वारा जीर्णोद्धार में सेवा करने हेतु

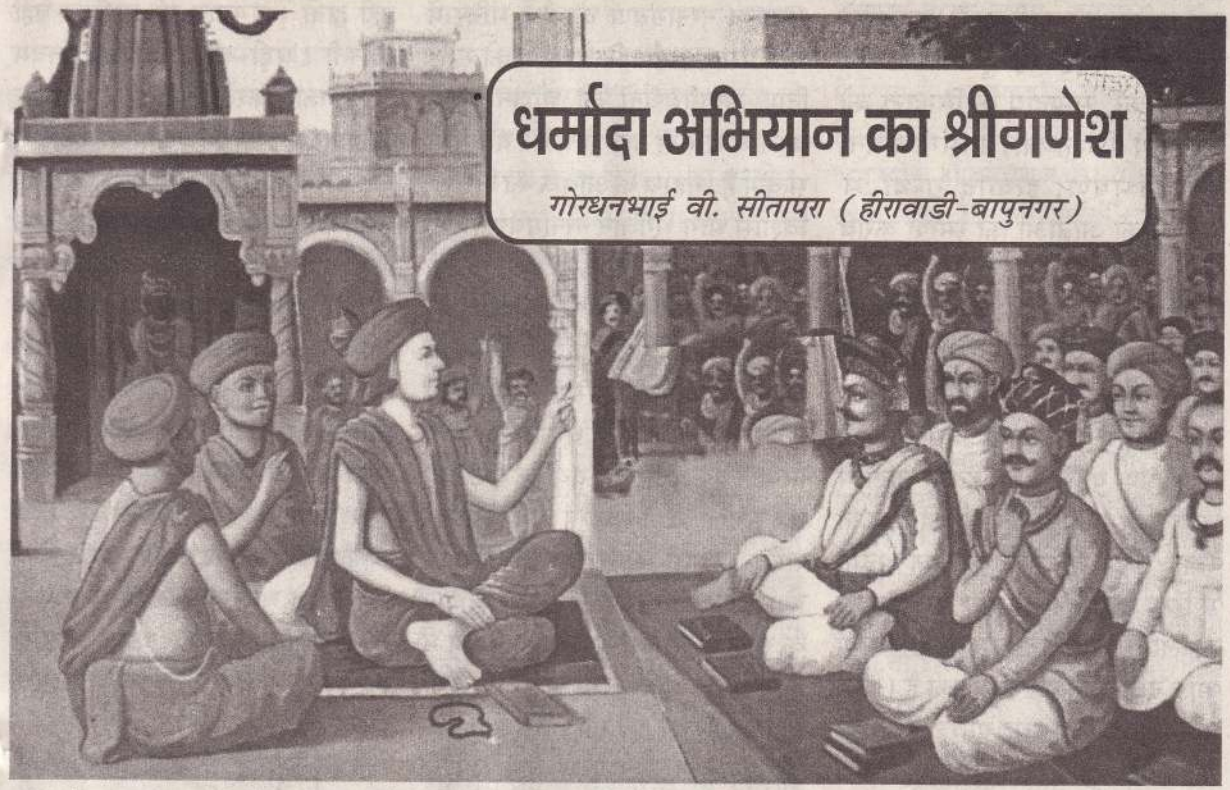
समस्त सत्संग समाज को हर्ष के साथ बताते हुए आनंद हो रहा है कि सर्वोपरि सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वयं अपनी बांहो में भरकर अपने स्व स्वरूप भरतखंड के अधिपति श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया, तब से आजतक सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है । हजारों - लाखों की संख्या में केवल अहमदाबाद में ही श्रीहरि के आश्रित हैं।

कितने हरिभक्तों को प्रतिदिन दर्शन करने का नियम होता है। जिसमें कभी व्यवधान नहीं आता है। कितने दूर रहने वाले हरिभक्त एकादशी, पूनम को श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आते हैं। सभी के मनोरथ संकल्प श्री नरनारायणदेव पूर्ण करते हैं।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति ष.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा, आशीर्वाद प्रेरणा से भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव के स्व मंदिर में चौखट के चारोतरफ सुंदर नयनरम्य संगमरमर पत्थर से जीर्णोद्धार का काम प्रारम्भ हुआ है। जहाँ पर पहले चूना तथा सीमेन्ट का प्लास्टर था उसी स्थान पर अब ऐसा नया भव्य आरस का पत्थर लगाया जा रहा है। जिसे देखकर प्रत्येक हरिभक्तों के मन में विशेष आनंद की स्फुरणा होगी, आह्लादकता मिलेगी। जिससे ऐसे महान कार्य में आपकी सेवा एक सुन्दर प्रेरणास्रोत तथा उदाहरण रूप बन कर रहेगी । इसलिए देश-विदेश में रहते श्रीहरि के आश्रित जन उदार हाथ से सेवा (दान पुण्य) का कार्य करके सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की प्रसन्नता के भागीदार बनेंगे ।

दान में भेंट की सेवा चेक, ड्राफ्ट, या रोकड़ा में **श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के नाम से मंदिर के कोठार में जमाकराकर पक्की पहुँच प्राप्त कर सकते हैं।**

आज्ञा से
श्री स्वामिनारायण मंदिर
कालुपुर, अमदाबाद-१



धर्मादा अभियान का श्रीगणेश

गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा लिखित शिक्षापत्री के १४७ वें श्लोक से गृहस्थाश्रमी भक्तों के लिये लिखा गया कि जिनका जो उद्यम, उद्योग, व्यवसाय, उससे जो धन प्राप्त हो उसका दशवां भाग भगवान श्रीकृष्ण को अर्पण करें जो कमजोर हों वे वीसवां भाग अर्पण करें।

देश विदेशमें भगवान श्री स्वामिनारायण का आत्यंन्तिक कल्याण देने वाला सत्संग फैला हुआ है। इस सत्संग में लाखो हरिभक्त हैं। परंतु सवाल यह है कि लाखों हरिभक्तों में से अपने इष्टदेव द्वारा लिखी शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन कितने लोग करते हैं। कितने तो आवक होते हुए भी एकाधबार रसीद फडवाते हैं। कितने तो धर्मादा निकालते ही नहीं, और कितने तो ऐसे भी है कि सम्प्रदाय की आज्ञा के विरुद्ध मनके अनुसम कहीं भी अन्यत्र धर्मादा जमा करादेते हैं। सभी यदि मन के अनुसार करने लगेंगे तो श्रीहरि की आज्ञा का क्या होगा ? श्रीहरिने हम सभी को ऐसी आज्ञा की है कि जो हरिभक्त श्री नरनारायणदेव देस में अर्थोपार्जन करते हो तो नरनारायणदेव को धर्मादा अर्पण करें, और जो लोग लक्ष्मीनारायण देव के देश में हों वे लक्ष्मीनारायण देव को धर्मादा अर्पण करें। ता. २७-६-०४ के दिन कालुपुर मंदिर में आयोजित स्वयं सेवकों की स्नेह मिलन सभा में अहमदाबाद गादी के भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री धर्मदा अभियान प्रारंभ किये। कीर्तन भक्ति के बाद प्रथम प.पू. शा. महंत स्वा. निर्गुणदासजी ने धर्मादा का रहस्य बताया।

विदेश में रहने वाले सत्संगी के अलावां जिन लोगों ने षष्ठी पूर्ति को इन्टरनेट पर देखा - उन्हे खूब आनंद आया। वे लोग महाराजश्री से तथा सम्प्रदाय से बहुत प्रभावित हुए। किसान खेत में बीज डाल देता है तो उससे ही सभी काम पूरा नहीं होता बल्कि बीज डालने के बाद उसका कार्यभार और बढ जाता है। पानीडालना, निराई करना इत्यादि। इसी प्रकार उत्सव पूर्ण होने के बाद अपना उत्तरदायित्व बढजाता है। देश विदेशमें जो महाराजश्री की प्रतिष्ठा है यह सम्प्रदाय का गौरव है। इस समय विमुख विघ्न संतोषी बहुत से लोग गाँव गाँव में घूमकर हमारे मंदिरों में हमारे युवानों को नाना प्रकार का प्रलोभन देकर अपना अनुगामी न बना लें इसका

उत्तरदायित्व हम सभी का है। जहाँ संतो की संख्या कम हो वहाँ युवा वर्ग भजन-कीर्तन करें, सम्प्रदाय के सिद्धान्त की समझायें शिक्षापत्री, सत्संगीजीवन, सत्संगीभूषण, इत्यादि ग्रन्थों में महाराजकी आज्ञाओं का स्मरण करावें यही सबसे बड़ी सेवा है।

द्रव्य की शुद्धी के लिये महाराजने अपने प्रत्येक गृहस्थ के लिए आज्ञा की है कि सभी लोग अपने आप के अनुसार दशवां भाग या वीसवा भाग भगवान को अर्पण करना। धन इकट्ठा करने में बहुत दोष है। किसान को खेती करते समय छोटे-बड़े जीवों की ज्ञात अज्ञात में हिंसा होती हैं। उस दोष को दूर करने के लिए भी भगवानने दशवां या वीसवां भाग दान करने की आज्ञा की है। बचा हुआ शुद्ध धन तथा पवित्र द्रव्य घर परिवार के सभी सदस्यों के लिए निर्दोष करनेवाला होगा। जैसे शुद्ध आहार शरीर में किसी रोग को आने नहीं देता। उसी प्रकार परीश्रम तथा नीति से अर्जित किया गया धन परिवार में सुख शांति को देने वाला होता है। जिसे सुखी होना है वह एक रुपया कमाये या लाख रुपया कमाये यदि वह धर्मादा करता है तो उसे कभी दुःख देखना नहीं पड़ेगा। नियमित धर्मादा निकालने वाला रोड़पति से करोड़पति होता है। इसके अनेकों उदाहरण है। अपनी आवक में से दशवां या वीसवां हिस्सा दान में रखना चाहिए। बाद में वही नरनारायणदेव स्वीकार करते हैं तो उनका उत्तरदायित्व बढ जाता है। धर्मादा निकालने से क्यां फायदा ? धर्मादा कहां जमा किया जाय ? ये बाते हरिभक्त भूल न जाय इसका उत्तरदायित्व युवक मंडल का है। जो दान देते है वह भगवान नरनारायण का है। मंदिर में भोग प्रसाद अर्पण किये, संतो को रसोई दिए, आत्मीयजनों को भोजन कराये यह सब धर्मादा नहीं होता है। यह सभी सत्कर्म है। गृहस्थ के आवक का दशांस, विशांस भाग भगवान नरनारायणदेव के हकका है यह मानकर धर्मादा श्री नरनारायणदेव के कोठारमें जमा करना चाहिए। कोई कहता है कि मैं गुरुकुल, किसी अन्य मंदिर, होस्पिटल या किसी शाला के बाधकाम में धर्मादा का भाग दिया हूँ यह उचित नहीं क्योंकि सम्प्रदाय की मर्यादा के विरुद्ध है। धर्मादा की रसीद आचार्य महाराजश्री के नाम की होती है। शहर तथा गाँव के उत्तर विभाग के सभी सत्संगी में धर्मादा के विषय में जागृति लाने के लिए प.पू. लालजी महाराजश्री की इच्छा है। जैसे षष्टी पूर्ति में अभियान चलाये थे वैसे धर्मादा अभियान सत्संगीमात्र के लिए मंत्र बन जाये ऐसा अभियान जिसके फल स्वरूप इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रसन्नता मिलती रहे ? गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुका आशीर्वाद लेकर संत गाँव गाँव जाते हैं। बडे-बडे मंदिरो, संस्थाओं की सेवा में संत लोग रुके रहते हैं। जहाँ संत नहीं पहुचं सकें वहाँ युवक मंडल के कार्य कर्ता ही उतरदायित्व निभायें और अपने सम्प्रदायोचित नियम बतायें।

छप्पैया के पुराने महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने बताया कि कितने प्रतिपक्षीलोग ऐसा कहते है कि धर्मादा कहीं भी कर सकते है धर्मादा कहीं भी उपयोग कर सकते है। जहाँ अच्छा काम हो वही उसका उपयोग। लेकीन भगवान की आज्ञा की अवहेलता से कभी उन्नति नहीं होती। भगवान की प्रसन्नता नहीं मिलती। बड़ी-बड़ी कंम्पनियां नियम विरुद्ध काम करके पैसे कमाती है, बाद में छापा डाल कर निकन्दन निकाल दिया जाता है। भगवान की आज्ञा में रहकर उन्ही के चरणों में अर्पण करना उचित है। आपके अगल बगल के मंदिर में कोई भी बड़ा विद्वान संत प्रतिस्पर्धी कथा वार्ता करने आवे तो उसे प्रेम से श्रद्धा से वापस करना उचित होगा। अपने महाराजश्री की या लालजी महाराजश्री की आज्ञा में कोई आया हो तो ही उसकी कथा वार्ता का श्रवण करना।

बादमें अहमदाबाद के प्रत्येक विस्तार से युवक मंडल के संचालकों ने प्रासंगिक प्रवचन करके धर्मादा अभियान में अपनी कटिबद्धता व्यक्त की।

अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने आशीर्वचन में अधोनिर्दिष्ट प्रासंगिक अमृतवाणी का लाभ दिया था।

महाराजने एक हरिभक्त को घड़े में एक बडे कोहडेंको डालने के लिये कहा। उस हरिभक्त ने खूब प्रयत्न किया। लेकिन घड़ेका मुंह छोटा और कोहडा बड़ा जाये तो कैसे जाये, लेकिन प्रयत्न चालू ही रखा। संत, हरिभक्त एकत्रित हुए सभीने कहा कोहडे को काट कर डाला जाय लेकिन वह हरिभक्त कैसा जैसा दादा खाचर, उसने कहा नहीं महाराजने आज्ञा की है कि बिना काटे ही घड़े में कोहड़े को डालना है। मतलब यह कि कोहड़ा गया कि नहीं लेकिन यहाँ तो आज्ञा पालन की बात है। महाराज के वचन में विश्वास यही मोटी मंत्र है। भगवान के वचन में बुद्धिकी

जरूरत नहीं ।

हम या संत या हरिभक्त महाराज के वचन में कोई फेरफार कर सकते नहीं है । उसमें अपनी बुद्दि की फुटपट्टी की मांप छोटी पडेगी । षष्टी पूर्ति में युवक मंडल ने अनुशासित काम किया । परिणाम स्वरूप उत्सव सफल हुआ । जिसे जो काम मिला वह निष्ठापूर्वक किया । उत्सव में श्रीजी महाराज या महाराजश्री का दर्शनभी नहीं कर सके, फिर भी महाराज की प्रसन्नता उन पर हर समय है क्योकि महाराज की आज्ञा में रहकर काम किये थे । हरिभक्त लोग चातुर्मास में विशेष नियम लेते है । शिक्षापत्री के बहुत सारे नियम पालते है । परंतु २१२ श्लोक में जहाँ धर्मादा की बात आयी है उसे कोई देखता नहीं है । हम भजन करते है । १०० या ५०० या १००० प्रदक्षिणा करते हैं धारणा-पारणा करते है यह सब बड़ी बात नही है क्योंकि यह सब अपने लिये है । महाराज वचनामृत में कहते हैं कि ब्रह्मांड के सभी राजा हमारे सामने हाथ जोड़कर खड़े रहते है इससे हमारा बड़प्पन नही है, नहीं कोई हमसे विमुख हो जाय तो छोटापन है । हम जो समझे हैं वही दूसरे को समझायें वही उत्तम सेवा है । सत्संग के लिए जो समय देते हैं उसे भी महाराज सुखी रखते हैं । मन के साथ झगड़ा करके भी यदि आप मिटिंग में आते हैं तो यह भी एक सेवा ही है ।

एक वेश्या ने सोक्रेटीस को चैलेन्ज देकर कहा कि आपके शिष्यों में भले ही तत्वज्ञान अधिक है लेकिन मैं अपने स्मलावण्य से आपके शिष्यों को जीत सकती हूँ । सोक्रोटीसने कहा तू शिष्यों को गिरा सकती हैं क्योंकि तुम्हारा सीढी से गिराने का काम है मेरा सीढी से चढाने का काम हैं । उतर ते समय नही लगता लेकिन चढते समय लगता है । सत्संग में रहने के लिए मन के साथ झगड़ा तो करना ही पडेगा । खंभे के साथ अपनी भुंजांओं को भरना होगा । बाहर के सींग, पूछ वाले शत्रुओं की अपेक्षा अपने भीतर के बिना सींग, पूछ के अन्त: शत्रुओं से सावधान रहना होगा । आप सभी को बहुत कहने की जरूरत नहीं आप सभी लोग पत्नी, वच्चे, धन्धा इत्यादि को छोडकर आते हैं । केवल आप सभीको मार्गदर्शन की जरूरत है । अपने इस विशाल मंदिर में अपने समय की मर्यादा का ख्याल रखकर नियमित दशवां या वीसवां भाग मंदिर के कोठार में जमा कराते रहें । बाद में आप इसका परिणाम उत्तम पायेंगे । धर्मादा में छोटे मंदिरोका हक नहीं बनता । कितने लोग मंडल बनाते है धर्मादा एकत्रित करते हैं और उस पैसे का बांधकाम में या मनचाहे जगह पर जहाँ से उनका स्वार्थ है वहाँ जमा करा देते हैं । यह हुआ नरनारायणदेव का द्रोह । परिणाम स्वरूप फल मिलता नहीं बाद में पैसे डॉकटर, वकील, जेबकाटनेवाले, इत्यादि के यहाँ चला जाता है । इसलिए स्वतंत्र विचार छोड़कर देव के कोठार में ही पैसा धर्मादा दान करें । दूसरे के अधिकार की वस्तु यदि हमें नही पचे तो देव के भाग का अंश कैसे पच सकता है । तिलक, चन्दन करना भी अपना धर्म है । धर्मादा करना भी अपना धर्म है । नरनारायणदेव अपनी धर्म भेंट स्वीकार करते हैं यहीं बड़ी बात है । षष्टी पूर्ति महोत्सव में सेवा करने का अवशर मिला यह भी बडी भाग्य थी अन्यथा कहीं के कही घूमते रहते ।

हमें जो प्राप्त हुआ है वह भगवान नरनारायणदेव की कृपा से हुआ है । अडसढ तीरथ चरणे, काशी, गंगा, गोदावरी, सभी भगवान ने हमें घर बैठे दे दिया है । महाराज तो यहाँ तक कहे कि अन्तकाल में मैं खुद लेने आऊँगा । लड्डु खाना और महाराज के धाम में जाना दोनो बातें कितनी अच्छी यह इसी सम्प्रदाय में सम्भव है । केवल श्रद्धा का विषय हैं । विचार पवित्र हो तो सभी संभव है । अब पहले जैसा नहीं - पंखा, लाईट, गाड़ी, कहाँ थी, लेकिन आज नरनारायणदेव की कृपा से सब सुख सुलभ हो गया है । तो ऐसा प्राप्त कर हर पल हर क्षण मन को जागृत रखना होगा, अन्यथा सत्संग कमजोर पड़ जायेगा । शरीर रोगी हो जाय तो डॉक्टर है, होस्पिटल है - लेकिन सत्संग रोगी हो जाय तो उसकी दवा या होस्पिटल कोई है ? इसलिए हर समय दिव्य भाव अहोभाव रखना होगा ।

८०% प्रतिशत लोगों को ख्याल नहीं हम क्या प्राप्त करने आये हैं ? ९९% प्रतिशत मनुष्य बुद्धि का उपयोग करते ही नहीं है । इसीलिए महाराज ने शिक्षापत्री की आज्ञा की है । बड़े प्रेम से समझाया है । यही भगवान की महानता हैं । महाराज कहते है कि जो मेरी आज्ञा में रहेगा उसे महासुख प्रदान करुँगा । सत्संगी यह बहुत बड़ी डिग्री है । महाराजश्री कई बार कहते हैं कि जब कभी दु:ख आवे तो शिक्षापत्री खोल कर देखलेना चाहिए कि किस आज्ञा का लोप हुआ है जिससे दु:ख आया । इसी प्रकार किस आज्ञा का पालन किया तो सुख आया । ये दोनो बात का लेखा जोखा शिक्षापत्री के माध्यम से करते रहना चाहिए । सुख कैसे स्थायी बना रहे इसके लिए शीक्षापत्री प्रमाणानुसारी जीवन जीने का बल भगवान दें एसी प्रभु को प्रार्थना ।

भगवान की मूर्ति के विषय में मरणभाव की कल्पना नहीं करनी चाहिए

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज)



वैदिक काल से मूर्तिपूजा की परंपरा ऋषियों द्वारा प्रमाणित की गयी है । सत्शास्त्रों में जिस प्रकार प्रतिपादित है उसी प्रकार वैदिक मंत्रो से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है । मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठित हुआ है या नहीं इसे कर्मकाण्डी विद्वान शास्त्री लोगें से ज्ञात हो जाता है । भगवान की मूर्ति के साथ तादात्म्य का भाव रखने वाले संत आज भी विद्यमान है।

ध्रुव, प्रहलाद, मीरा, नरसिंह मेहता, संत सूरदास संत तुकाराम, संत एकनाथ इत्यादि संतो की अविचल भक्ति के आधीन भगवान को होना पड़ा था । इस में भावनात्मक ऐक्य दृश्यमान होता है। अनेक संतो, भक्तों तथा उपासकों को मूर्ति में भगवान का दर्शन हुआ है । भगवान की मूर्ति में अनन्यभाव से भजन करने से मन शुद्ध होता है । विकार नष्ट हो जाता है । हृदय में असाधारण शान्ति मिलती है । ऐसा आज के वैज्ञानिकोने भी स्वीकार किया है ।

हमें अपने मन की पहचान नहीं है । गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने सत्य ही कहा है - "मय्येव मन आधस्व" मुझ में मन को लगावो। हमारा मन ही बन्ध और मोक्ष का कारण है । शंका-कुशंका, श्रद्धा, अश्रद्धा में मन डूबा रहता है । कोयले के रंग को बदलने में केवल अग्नि समर्थ है । इसीप्रकार मन को स्वस्थ करने के लिये भगवान की चरण शरण में एकाग्र करना पड़े ।

कितने लोग तो मूर्ति के विषय में भी मरण का भाव करते हैं । वर्षोपुरानी यह मूर्ति है । अपूजित है। इस में भगवान कहाँ से होगें ? इस प्रकार नास्तिक भाव मन में लाते हैं । यदि उनकी मनोकामना मूर्ति से पूर्ण होती है तो प्रसन्न होते है, अन्यथा पाषाण समझते हैं । आज भगवान की इच्छा पर जीने वाले कितने हैं ?

श्री स्वामिनारायण भगवानने अहमदाबाद, भुज, जेतलपुर, गढडा, वडताल, मूली, इत्यादि स्थलों पर मूर्ति को अनपे हाथों से प्रतिष्ठित किया । आज भी उन सभी मूर्तियों में अखंड स्व सेविराजमान हैं । इसका अनेको प्रमाण मिल चुका है। सभी धर्मप्रेमीजन, सत्संगी, हरिभक्तों का विश्वास नित्य बना रहे, भगवान की भजन नित्य निष्ठा से हो सके, मूर्ति में दर्शन के समय मूर्ति का भाव खत्म होकर पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण का दर्शन होता रहे इसी भाव से श्रीजी महाराजने अहमदाबाद के मध्य चौथे वचनामृत में बताये कि "नट की विद्या से ज्ञानी की मति भ्रमित नहीं होती" । इसी प्रकार श्री नरनारायणदेव अनेक देहधारी नटों का त्याग करते हैं । वही नरनारायणदेव सभी अवतारों का कारण हैं । नरनारायण के विषय में जी मरणभाव की कल्पना करते हैं उन्हे अनेक देह धारण करना पड़ता है । यमपुरी के दुःख को भगना पडता है । जो भगवान नरनारायणदेव की मूर्ति के विषय में अजर अमर समझते हैं वे मुक्त हो जाते है । इसलिये अपने उद्धव सम्प्रदाय में सत्संगी लोग भगवान की मूर्ति के विषय में मरण भाव की कल्पना नहीं करना और इसे लिखलेना ।



अहमदाबाद मंदिर में पवित्र अधिक मास के उसत्वो की झांकी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं भावीआचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से अहमदाबाद मंदिर में ता. १८-७-०४ से १६-८-०४ तक अधिक श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से अधिक श्रावण वद द्वितीय अमावास्या तक समग्र मास पर्यन्त विविध उत्सव अपने वैष्णव संप्रदाय की प्रणालिकानुसार उत्सवों को खूब धूमधाम से मनाया गया। परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की शुभ सानिध्य में प्रतिदिन प्रभात से ही उत्सवों का सुन्दर दृश्य देखने को मिलता। श्रृंगार आरती प.पू. आचार्य महाराजश्री खुद करते थे। कभी-कभी प.पू. लालजी महाराज भी करते थे। बाहर के कार्यक्रमों में जब जाना होता तभी नरनारायणदवे के पुजारी भाव से आरती करते, जिसका दर्शन करके भावुक भक्त जन आनंदित होते थे। साथ ही भगवान की उन लीलाओं का दर्शन होता और चिरस्मरण बना रहता। प्रत्येक उत्सव के अलग-अलग यजमान भी उत्सव का दिव्य लाभ लेकर धन्यता का अनुभव करते थे।

अधोनिर्दिष्ट अधिक मास के उत्सवों की एक सुन्दर झांकी :-

अधोनिर्दिष्ट अधिक मास के उत्सवों की एक सुन्दर झांकी

ग्वाल बाल दर्शन

पवित्र मास के प्रथम दिन ही ब्रह्मचारी पूजारी मंडलने श्री नरनारायणदेव को सुन्दर ढंग से सजाकर ग्वाल-भरवाड वेश धारण कराया था।

श्री नरनारायणदेव के चौकठ के पास हीकोठारी स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी तथा सत्यप्रकाशदासजी स्वयं आगे होकर कोठार के स्टाप एवं विद्यार्थियों को साथ में रखकर व्रजभूमि का निर्माण किया था।

सुंदर वनराजी, खिले हुए पुष्प, बड़े-बड़े वृक्ष, हरी-हरी घास से सुशोभित वनमाला में गायो को चराने का स्मधारण करके ग्वाल के स्म में, एकहाथ में वांसुरी धारण किये हुए है। ग्वाल मित्र पुष्प सूंघ रहे है। मित्र काना के साथ हाथ में लकड़ी लेकर ग्वालों के साथ गाय चरा रहे हैं। ऐसा मनोहर दृश्य देखकर भक्तजन अत्यानंदित हो गये।

यजमान पद पर प.भ. रसिकभाई दयालजीभाई सोनी रहकर प्रसन्नता प्राप्त की थी।

रथयात्रा

भगवान श्री कृष्ण व्रज में से राजा कंस के सोने के रथपर बैठकर भैया बल भद्र के साथ मथुरा पधारे थे। ११ वर्ष तक व्रजभूमि पर नंगे पांव चलने वाले प्रभु के लिये तो सोना का रथ ऐतिहासिक था। इस दिव्य लीला का दर्शन हो इसके लिए जगन्नाथ पुरी में विश्व विख्यात रथयात्रा निकलती है। इसी वैष्णव प्रणालिका अनुसार अपने मंदिरो में भी रथयात्रा उत्सव मनाया जाता है। उसी अनुसार आषाढ द्वितीया के दिन श्री नरनारायणदेव के समक्ष चांदी से जडित विशाल रथ भृगांर कर रखा जाता है जिस पर भगवान को विराजमान किया जाता है। अगल बगल में भगवान के चार पार्षद जो भगवान के रक्षार्थ चलते थे। वनराजी की शोभा उपस्थित करता हुआ दृश्य था। रथमें विराजमान भगवान श्रीकृष्ण महाराज प्रसन्न मुद्रा में सभी भक्तजनों को दर्शन दे रहे थे। प.भ. दशरतभाई प्रहलादभाई पटेल ने भगवान की पूजा करके प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त की थी।

श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव

श्री स्वामिनारायण इस ब्रह्मांड पर कृपा करके अनंत मुमुक्षुओं पर कस्गा दृष्टि करके सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव को वि.स. १८७८ फाल्गुन शुक्ल तृतीया के दिन स्वयं अपने बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया था। और वरदान दिया कि मैं इसीस्म में रहूँगा और भक्तों की सेवा स्वीकार करुँगा । भक्तजन ? आज भी श्री नरनारायणदेव के स्वरुप में भगवान श्रीहरि सभीकी भावना स्वीकारते हैं। फाल्गुन शुक्ल-३ के अनुसंधान में अधिकमास की शुक्ल तृतीया को पाटोत्सव धूम धाम से मनाया गया । ६ बजे महाभिषेक विद्वान पंडितो द्वारा यजमान पद पर वर्षाबहन नवीनचंद्र तथा प.भ. सविताबहन प्रेमजीभाई (लंदनवासी) द्वारा सम्पन्न हुआ । ६-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्रीने महाभिषेक प्रारंभ किया । पुजारी स्वामी राजेश्वरानंदजी तथा उनके मंडल के सहयोग से, वेदमंत्रो के गान के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्रीने भगवान को भाव के साथ जल, दूध, दहीं, घी, सहद, इत्र, गुलाबजल, केशरमिश्रितजल से भगवान श्री नरनारायणदेव, धर्मभक्ति, हरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्ण देव का महाभिषेक करके भक्तजनो के अन्तर में आनंदानुभूति कराये। इसके बाद भगवान का चन्दन-तुलसीदल से पूजन करके महाराजश्री भगवान की आरती उतारे । और पूजारी स्वामीने महाराजश्री को प्रसादी का पुष्पहार पहनाकर संमान किया वही हार लालजी महाराजने वर्षा बहन यजमान को भेजवा दिया ।

वस्त्र परिधान करके महाराजश्री सभा मंडप में पधारे उस समय कथा वक्ता ने पाटोत्सव का माहात्म्य समझाया। यजमान परिवार के भक्तजन प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन करके आरती किये । महाराजश्रीने यजमान को हार्दिक आशीर्वाद देकर भगवान नरनारायणदेव की मूर्ति भेंट में दी । पू. महन्त स्वामीने पाटोत्सव, भगवान का माहात्म्य, इत्यादि समझाया ।

प.पू. महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद में बाताया कि जो प्रतिदिन भगवान नरनारायण की सेवा का अवशर मिला है यही बडीभाग्य है इसी निष्ठा से भगवान को आत्मसमर्पण करना ही भगवत्प्राप्ति का मार्ग है ।

सभा जबतक चली तबतक कोठारी स्वामी ब्रह्मविहारीदासजीने अन्य सहयोगियों के साथ अन्नकूट का भोग भगवान के सामने रखदिया। १० बजे भगवान की अन्नकूट की आरती हुई । आरती प.पू. महाराजश्रीने की सभी दर्शन कर धन्य हो गये। प.भ. वर्षाबहन पाठक तथा प.भ. सविताबहन का परिवार खूब प्रसन्न हो गये। गाँव गाँव से आये हुए हरिभक्त भी आनंदका लाभ लिये ।

गणेश चतुर्थी

भवानी शिव के पुत्र मंगलकारी भगवान गणेशजी का जन्मदिन भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को होता है उसी के अनुलक्ष्य में भगवान नरनारायणके सामने भगवान गणपति की पूजा, आरती घी से परिपूर्ण लड्डूका भोग लगाया गया। ऐसे विघ्न हर्ता देव की आरती प.पू. आचार्य महाराजश्रीने की। सभी दर्शन करके धन्य हो गये । यजमान अ.नि.प.भ. प्रभुदास उमेदभाई पटेल परिवार ने पूजा करके भगवत प्रसन्नता प्राप्त की ।

वसंत पंचमी

वर्ष में सबसे अधिक आनंददायक वसंतऋतु का प्रथम त्यौहार वसंत पंचमी है। इसे भगवान श्री स्वामिनारायण ने उत्तम स्थान दिया है । इसी वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री की रचना किये थे । मूलीधाम में श्रीहरिने संत भक्तों के साथ रंग खेले थे, उसी का स्मरण करके प.पू. आद्याचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने इस दिन मूली में सदा के लिये उत्सव उद्घोषित किये थे । उसी को लक्ष्य करके वर्तमान महाराजश्री भी प्रतिवर्ष जाते रहते हैं ।

इसी शुभदिन के अनुलक्ष्य में श्री नरनारायणधेव के समक्ष भगवान की मूर्ति शिक्षापत्री लिखते हुए का तादृश स्म प्रस्तुत किया गया भक्तजन दर्शन का दिव्य लाभ लिये । यजमान : प.भ. वासुदेवभाई लवजीभाई पटेलने पूजन करके प्रसन्नता प्राप्त किये थे ।

कुंजगली

कृष्ण विरह में व्याकुल राधा का निवास स्थान भगवान श्री नरनारायणदेव के समक्ष कुंजगली का निर्माण किया गया था। सुन्दरता को बढाने में नाना विध हरियाली सुन्दरवन का सीन उपस्थित किया गया था । भक्तजन भाव से दर्शन करके आनंद

प्राप्त किये । यजमान : प.भ. अजयभाई पुरुषोत्तमभाई सोमाभाईने पूजन करके लाभ प्राप्त किया ।

शाकोत्सव

लोया में भगवान श्रीहरिने १२ मन घी में ६० मन बैगन का बघार करके संत भक्तों को प्रेम से भोजन कराये थे । ठीक वही सीन भगवान नरनारायण के समक्ष उपस्थित किया गया था । जिसमें बैगन, मसाला, लविंग, गुण, राई, जीरा, मरचा, नमक, हल्दी इत्यादि का प्रत्यक्ष दर्शन करके सभी आनंदका अनुभव किये । यजमान : प.भ. लाधारामभाई परिवार के साथ पूजन करके प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त किये ।

राधाष्टमी

श्री राधाजीका सुन्दर श्रृंगार किया था । श्री नरनारायण देव के समक्ष सुन्दर आसन पर राधाकृष्ण को बैठाया गया था । जिन के चारो तरफ सुहाना वातावरण हरियाली से युक्त बनाया गया था । यजमान पार्षद मुकुंद भगत (हजूरी) पटेल इश्वरभाई मोहनलाल (सापावाडा) आ. केशीयरश्री, सिसोदिया विहुभा रायसिंह (केशीयरश्री) डभोउ पूजन करके प्रभु प्रसन्नता प्राप्त की थी ।

रामनवमी

श्री स्वामिनारायण भगवान के प्राकट्योत्सव प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव समक्ष सुन्दर श्रृंगार किया था । आसोपालव रंगबिरंगी पत्तियों से सजाया गया था जिस पर श्री हरिकृष्ण महाराजको पधराया गया था । प.पू. महाराजश्री के सांनिध्य में ब्रह्मचारी महाराजने आरती की । भगवान को प्रसाद में भेंट किया । भगवान को महाराजश्रीने पलने में झुलाया । यजमान : प.भ. मनसुखभाई खोडाभाई डाभीने पूजा करके भगवान की प्रसन्नता प्राप्त की।

बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव

नरनारायणदेव मंदिर के बगल में अ.नि.प.पू. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसाजी महाराजने बाल स्वस्प घनश्याम महाराज की देदीप्यमान मूर्ति की प्रतिष्ठा की थी । उन्ही महाप्रभु के रामनवमी के उपलक्ष्य में बाल स्वस्प घनश्याम महाराज का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । यजमान : मनसुखभाई खोडाभाई डाभीने महापूजा का दिव्य लाभ लिया ।

६-३० बजे प.पू. महाराजश्रीने पीताम्बर धारण करके पंचामृत जल, दूध, दही, घी, सहद, इत्यादि से घनश्याम महाराज का वेद विधि से महाभिषेक किया । चन्दनादिलेपन करके आरती किया । सभी ने दिव्य दर्शन का लाभ लिया । यजमान परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती पूजा करके दिव्य लाभ लिया । महाराजश्रीने यजमान को भगवान की मूर्ति भेंट की । प्रातः १० बजे घनश्याम महाराज के अन्नकूट की आरती करके सभी भक्तजनों ने आनंदका अनुभव किया ।

विजयादशमी

असुर शक्ति के सामने भगवान श्री राम के विजय के अनुसंधान में विजययात्रा का सुन्दर आयोजन किया गया था । चांदी के पांच हाथी इसके अलावां घोडा को भी खूब सजाया गया था । जिस पर भगवान विराजमान हुए थे । अगल बगल में पार्षद सशस्त्र चल रहे थे । ऐसी विजययात्रा का दर्शन करके भक्तजन जीवन को धन्य समझा । यजमान : स्वीडन के प्रेसीडेन्ट प.भ. नरेन्द्रभाई ने लाभ लिया था ।

एकादशी तुलसी विवाह

वृन्दा नामकी पतिव्रता नारी भगवान को समर्पित हुई थी । उसी की स्मृति में भगवान बाल कृष्ण तथा तुलसीजी का विवाह वेदविधि से किया गया । बाद में भगवान नरनारायणदेव के समक्ष उस कन्या को पीठा पर बैठा गया । भगवान को सुन्दर ढंग से सजाया गया था । वर कन्या पक्ष के दोनो यजमानों ने इसका सुन्दर लाभ लिया था । यजमान : प.भ. सुरेन्द्रभाई पटेल (विशालावाला)ने पूजन करके विशेष लाभ लिया था ।

रंगमहोल श्रीघनश्याम महाराज का पाटोत्सव

अनंत जीवात्माओं को मुक्ति देने के लिए इस पृथ्वी पर पधारे हुए भगवान घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य श्री केशवप्रसादजी महारजने रंग महोल में की थी । कार्तिक शुक्ल १२ के दिन यह पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । प्रातः ६-३० बजे प.पू. महाराजश्रीने दूध, दही इत्यादि पंचामृत से, गंगाजल से महाभिषेक किया था । बाद में आरती उतारे थे । सभी ने दर्शन का अनहद सुख प्राप्त किया था ।

देवताओं का उद्धार करने हेतु बामन

भगवान का प्राकट्य हुआ था । ठीक वैसा स्वरूप धारण करके भगवान को पीढे पर बैठाकर पूजन किया था । यजमान : प.भ. मुकेशभाई वसंतभाई टांक परिवारने पूजन करके धन्यता का अनुभव किया था ।

नृसिंह जयंती

भक्त प्रहलाद के ऊपर अमिप प्यार की वर्षा करने वाले भगवान नृसिंहने जिस स्वरूप को धारण किया था । वही स्वरूप भगवान नरनारायणदेव के समक्ष प्रस्तुत किया गया था । भगवान के स्वरूप को तथा भक्तप्रहलाद को पुष्पमाला धूप दीप इत्यादि करके अत्यानंद की अनुभूति की थी । यजमान : सुरेन्द्रभाई पटेलने पूजनका लाभ लिया ।

पूजन श्री हनुमान जयंती

दासत्व भक्ति तथा निष्ठाभक्ति के उत्तम उदाहरण धर्मकुल देवता श्री हनुमानजी महाराजका जन्मदिन चैत्र पूनम के अनुसंधान में श्री नरनारायणदेव के समक्ष सुन्दर मूर्ति को अलंकृत करके पुष्पहारादि द्वारा पूजन करके सिन्दूर का तिलक करके सभी ने आनंद का अनुभव किया । यजमान : अ.नि. शान्ताबहन शंकरलाल पटेल मेतपुरवाला ।

केशर स्नान

अक्षय तृतीया से ज्येष्ठानक्षत्र तक ग्रीष्म ऋतु में भगवान को चन्दन चर्चित किया जाता है । ज्येष्ठा नक्षत्र प्रारंभ होने के साथ ही भगवान को केशर मिश्रित जल से स्नान कराया जाता है । उसी अनुसंधान में श्री नरनारायणदेव को केशर से स्नान का उत्सव किया गया । प्रात: ६-०० बजे यजमान : वसंतभाई त्रिभोवनभाई टांक का सम्पूर्ण परिवार ने भगवान का पूजन किया । ६-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्रीने भगवान को सुगंधित जल से अभिषेक किया । पश्चात् चन्दन, तुलसी इत्यादि से भगवान की पूजा की और आरती किये । इस सभा के यजमान प.भ. वसंतभाई टांक लाभ लिये थे ।

हिंडोला

श्रावण मास के अनुसंधान में सतत चार दिन तक हिडोला दर्शन का उत्सव किया गया । प्रतिदिन गुलाब, चंपा, केतकी इत्यादि नाना प्रकार के पुष्पों से हिंडोला को अलंकृत करके श्रीहरिकृष्ण महाराज को बैठाकर झुलाया गया था । भक्तजन इस दिव्य दर्शन का लाभ लिये थे । यजमान : प.भ. मिशाल हेमंतभाई पटेल नडीयादवाला ।

छपैयाधाम दर्शन

उत्तर विभाग की दिव्य सम्पत्ति भगवान श्री बाल घनश्याम महाराज की जन्म भूमि छपैया धाम का निर्माण भगवान नरनारायणदेव के सामने करने में आया । बड़े बड़े वृक्ष हरियाली, छोटे छोटे मकान, नारायण सरोवर गाय बैल इत्यादि को बनाकर छपैया की झांकी का दृश्य उपस्थित किया गया था । भक्ति धर्म निवास स्थान के पास बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का दिव्य स्वरूप प्रस्तुत किया गया था । जिसका दर्शन करके भक्तजन आनंदित हुए थे । यजमान : प.भ. जी.के. पटेल (स्कीम कमेटी सभ्य)ने पूजन का लाभ लिया था ।

वन विचरण दर्शन

अनंत जीवों का कल्याण करने के लिये बाल्यावस्था में ही माता पिता भाई भाभी सभी आत्मीयजनों को छोड़कर तपस्वी वेश में श्री नीलकंठ वर्णी के वन विचरण का अद्‌भुत दृश्य प्रस्तुत किया गया था । छटादार वृक्षों से झाड़झंखारों से, नदी-झरनों से, हिंसकजंतुओ की भयावह आवाजों से, पूर्णवन की स्थिति उपस्थित की गयी थी । भगवान के हाथ में कमंडलु, कौपीन, मुंजकी माला, पुष्पमाला, शालिग्राम, यज्ञोपवीत तुलसी की कंठी इत्यादि से वर्णी को सजाया गया था । जिनका दर्शन मनमोहक था । सभीने दर्शन का लाभ लिया था ।

जन्माष्टमी

भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्व के अनुसंधान में जन्माष्टमी का उत्सव भगवान श्री नरनारायणदेव के समक्ष किया गया । अनेक रंग विरंगे गुब्बारो से सजाया गया था ष आसोपालव के बन्दन वार बने थे वातावरण सुहावना लग रहा था । भगवान बाल कृष्ण की ब्रह्मचारी महाराज ने आरती उतारकर पंजीरी का भोग लगाया था - जिसे प्रसाद के स्वरूप में वितरित किया गया था । यजमान : प.भ. जगदीशभाई ने पूजा का लाभ लिया ।

नन्द महोत्सव

गोकुल में नंद-यशोदा, गोप-गोपियों ने जिस प्रकार भगवान का जन्मोत्सव मनाया था ठीक वैसा ही भगवान नरनारायणदेव के समक्ष गोकुल का निर्माण किया गया था ।

वनराजी फूल-फल वाले वृक्षों से रमणीय दृश्य बनाया गया था ।

सोना का पालना बनाया गया था । सभीने इस दिव्य दृश्य का आनंद लिया । यजमान : प.भ. विठ्ठलभाई शिवरामभाई पटेल महाप्रभु की पूजा करके आनंदका अनुभव किये थे ।

हिमालय दर्शन

श्री नरनारायणदेव के समक्ष वद्रिकाश्रम का दृश्य उपस्थित किया गया था । जिसमें हिमालय बनाकर उसमें तपस्वीलोग बैठकर तप कर रहे हों, चारो तरफ बरफीला पहाड ही फैला हो ऐसा वातावरण बनाया गया था । बडे बडे हिमाच्छादित पर्वत शिखर बनाये गये थे । उसी में तप करते हुए नीलकंठ वर्णी को बताया गया था । वद्रिकाश्रम में तप करते हुए नरनारायण तपस्वी स्वरूप में दिखाये गये थे । जिन के दर्शनार्थ अहमदाबाद की जनता उमड़ पडी थी । मानव मेदिनी चारो तरफ भरी रहती थी । दर्शन करके आनंद लोगों में समाता नहीं था ।

एकादशी के दिन समूह महापूजा

स.गु. गोपालानंद स्वामीने जिस महापूजा की स्थापना की थी आज भी वह भगवान के समक्ष होती रहती है । उसी पवित्र महापूजा का आयोजन सभा मंडप में समूह मे किया गया था।

प.पू. आचार्य महाराजश्री विदेश की यात्रा पर थे इसलिये पू. महंत स्वामी की आज्ञा से वयोवृद्ध संत पुराणी घनश्याम चरणदासजीने महापूजा विधि करायी थी । मुख्य यजमान डॉ. कनुभाई एस. पटेलने लाभ लिया था । साथ में ६० हरिभक्तों ने भी महापूजा का लाभ लिया था ।

पूज्य पुराणि स्वामीने विधिपूर्वक भगवान की महापूजा करायी थी । आवाहा,न आसन, पाद्य, अर्ध्य, आचमनि, दूध, दही, घी सहद, शर्करा, केशर, फूल, फल, यज्ञोपवीत, वस्त्र इत्यादि द्वारा षोडशोपचार विधि से पूजन कराकर भगवान श्रीहरिकृष्ण को तुलसीपत्र द्वारा जनमंगल पाठावलि से अर्चन किया था । इस दर्शन का भक्तजन लाभ लेकर आनंदित हुए थे। सतत पांच दिन तक हिमालय दर्शन करके सभी प्रमुदित हुए थे ।

दिपावली-अन्नकूट-उत्सव

व्रज में बालकृष्ण ने गोवर्धन पूजा करके अन्नकूट उत्सव किया था । जिसके अनुसंधान में भगवान नरनारायणदेव के समक्ष अमावास्या के दिन दीपक जलाकर दीपावली उत्सव मनाया गया था । अन्नकूट के यजमान पद का लाभ सभी को मिले इस लिए तीन मंदिर तथा तीन घनश्याम महाराज का कुल ६ मंदिर तथा ६ यजमान को लाभ मिला । प्रत्येक यजमान ने भगवान की पूजा किया । को. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजीने अन्नकूट की सुव्यवस्थित तैयारी करवायी थी । जो देखते ही बनता था । ११ बजे अन्नकूट की आरती के बाद सतत ४ घन्टे तक हजारों हरिभक्तों ने प्रसादभोगग्रहण किये और भगवान के दर्शन का लाभ लिये थे ।

समूह विष्णुयाग महोत्सव

समग्र अधिकमास में लाभ लेने वाले यजमान तथा सहयजमान ने विष्णुयाग का लाभ लिया । व्रजेन्द्र प्रसादहोल में यज्ञशाला की रचना की गयी थी । यज्ञ की तैयारी को स्वा. ब्रह्मविहारी ने की थी । विद्यार्थियों के सहयोग से पूजा सामग्री एकत्रित करने में सहूलियत थी ।

पुरोहित कमलेशभाई तथा ब्रह्मदेवों ने वेद मंत्रोच्चार के साथ सतत दोपहर के ११ वजे तक विष्णुयाग कराये थे । १०-३० बजे महाराजश्री के विदेशयात्रा पर होने के कारण पू. महंत स्वामीने श्रीफल का हवन किया । यज्ञशाळा में ही मास पर्यन्त सेवा करने वाले सभी भक्तजनों को अन्नकूट का प्रसाद भगवान की मूर्ति में भेटं दी गयी थी । श्री नरनारायण युवक मंडल ने सुन्दर सेवा की थी । दोपहर को २ वजे सभी यजमानों ने भोजन प्रसाद लिया था । यह विष्णुयाग महोत्सव आत्यन्त आनंद दायक तथा अविष्मरणीय रहा । प्रत्येक प्रसंग पर मास पर्यन्त अलग अलग कीर्तन-धून, भजन, उत्सव के अनुसार होता रहा । अधिक मास में प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद तथा पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से कोठारी स्वामी के परीश्रम से कोठार के स्टाफ तथा विद्याथीयों की भावना पूर्ण सेवा से अधिक मासका उत्सव सरलता से तथा उत्तम ढंग से सम्पन्न हो सका । इसकी छाप भक्तजनों के मन पर छोड़ता गया । ऐसा यह उत्सव था ।

(अहेवाल कोठारी स्वा. सत्यप्रकाशदासजी)

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सरल व्यवहार मन से करना चाहिए

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

श्रावण महीना अर्थात् उत्सव भक्ति, सत्संग, भजन, तप, व्रत का महीना । प्रत्येक मंदिर में नाना प्रकार के कार्यक्रम होते हैं । कहीं तो भक्त एकत्रित होकर भजन करते है, कहीं सन्तों के साथ सत्संग करते है । मुमुक्षु लोग भावुक सत्संगीलोग समय निकाल कर सत्संग में आते है । निःस्वार्थ भाव से जहाँ सत्संग होता है वहाँ पत्थर भी पिघल जाता है । अच्छेलोग आकर्षित हो जाते है ।



एक छोटे गाँव में एकछोटा सा मंदिर श्रावण मास में संत आये हुए थे । प्रतिदिन कथा वार्ता, सत्संग, भजन, कीर्तन होता था । सभीलोग तन्मय होकर भजन करते थे । बगल में एक शेठ का मुनिम रहता था । उसके कान में भजन कीर्तन पडता था । प्रारम्भ में मुनिम को ऐसा हुआ कि ये लोग व्यर्थ का समय बिगाडते है। लेकिन धीरे-धीरे जैसे जैसे समय बीतने लगा वैसे वैसे मुनीम के मन में परिवर्तन होने लगा । और परिणाम स्वस्म मंदिर में आने लगा । कथावार्ता सुनने लगा । सन्तों की बात सुनता । अब उसे अच्छा लगने लगा । दो-चार दिन में तो सभी के साथ मिल गया और भजन कीर्तन में भाग लेने लगा । लेकिन मन भजन में नही लगता था । एकदिन मुनीमजी अपनी सभी बात संतो को बता दी । यह सुनकर संतो ने कहा की जो तुमने जीवन में कोई पाप नहीं किया हो केवलस पांच हजार स्मये की चोरी की है तो उसे वापस कर दो । तो तुम्हारा मन भजन कीर्तन में लगेगा । दो दिन के बाद संतो ने पूछा कि अब मन भजन में लगता हैं । तो शेठने कहा थोड़ा थोड़ा लगने लगा है । सन्तो ने कहा कि ऐसा होना नही चाहिए अब पूरा मन लगना चाहिए, इसका मतलब शेठको पैसा देकर मांफी नही मांगे होगे । हाय, हाय, महात्माजी मेरी इज्जत चली जायेगी मैने तो चुपकेसे स्मये रख दिये । मांफी मांगूतो शेठ को खबर पड़जायेगी और मेरे ऊपर से विश्वास हट जायेगा । तब संतो ने कहा चलो हम तुम्हारे साथ आते है, तुम्हे कोई तकलीफ नहीं होगी ।

मुनिमजी के साथ संत शेठ के पास गये । सभी सत्य कह सुनाया । बात सुनकर शेठ आश्चर्य में पड़ गया । इतनी छोटी भूल के लिये इतनी नम्रता । शेठ खुश खुश हो गया । मुनीमजी को भेंट लिया । वेतन बढ़ा दिया । मुनिमजी संतो का आभार मन ही मन करने लगे । यही सत्संग का प्रभाव है जैसे हीरा में नानाविध घाट होता है वैसे ही इस वार्ता में तत्व छिपा हुआ है । उदाहरण के स्म में - जो व्यक्ति निश्छल हो और क्षमा मांग ले तो विशेष लाभ मिलता है । दूसरी बात निश्छलता, निर्द्वन्द्वता सत्संग में से मिलती है । तीसरी बात यह कि शेठ जैसे व्यक्ति भी विरल होते है । जो निष्कपट, निश्छल व्यक्ति हो वही क्षमा कर सकता है । जीवन में कभी भी भूल हो तो निश्छल भाव से भूल की मांफी मांग ले तो इससे बढ़कर कोई तप नहीं है । यही तप सदैव हमारे ही पक्ष में लाभप्रद होता है ।

सत्संग समाचार

अधिक मास में बहनो को अधिक मास का अमूल्य लाभ

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव भगवान के सांनिध्य में बहनो की हवेली में समस्त बहनो की गुरुप.पू. अ.सौ. गादीवालाश्रीने ता. ७-८-०४ से १०-८-०४ तक श्रीमद् सत्संगी जीवन पंचाह का अमृतमयी वाणी में सभी को रसपान कराया था । सभी सत्संगी बहनों को जीवन कैसा जीना चाहिए ऐसा सप्रमाण धर्मोपदेश दिया था । ता. ८-८-०४ के दिन घनश्याम महाराजके प्राकट्य की जब कथा की तव मानो तद्स्म की स्थिति खडी हो गयी थी । सभी सत्संगी बहनों ने पूज्या गादीवाला की इस अलौकिक कथा का श्रवण कर अत्यानन्द में विभोर हो गयी थी । जब उन्होंने भक्तिमाता द्वारा श्री घनश्याम महाराज के लालन पालन की कथा सुनाया तब लोगों ने प्रत्यक्ष भक्ति माता का स्वस्म गादीवाला मे देखते हुए तल्लीन हो गयी थी । अहमदाबाद में खूब वरसात होते हुए भी बहनों की संख्या इतनी अधिक हो गयी कि पूरी हवेली में बैठने की जगह ही नहीं रही जैसे छोटी पडने लगी हो । दूर-दूर से कथा का लाभ लेने हेतु बहनों ने अपना जीवन पथ सार्थक किया । यही गुरु के प्रति आत्मनिष्ठा - प्रेम की एक झलक है ।

प.पू. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवाला की जब कथा होती तो जैसे मेघ भी आपश्री की कथा सुनने हेतु न पधारे हो सारा देव मंडल जहाँ अदृष्ट स्म से कथा का श्रवण कर रहा हो वहाँ प्रत्यक्ष प्रमाण स्म मेघ पांच दिन कथा का लाभ लिया, और पूर्णाहुति के दिन जन मेदिनी इतनी अधिक हो गयी कि तीन मंजिल की हवेली छोटी हो गयी और मेघराजा रात दिन विश्रान्त होकर पूर्णाहुति का लाभ लिये यही भक्ति-भक्त-कृथा का हार्ध है ।

मानवता की प्रतिस्मा ऐसी पू. गादीवाला जब अपनी जीवन गाथा की एक ही झलक समाज में रखी ही थीं कि सारा समाज मानो आनन्द की लहर में डूब गया हो अपनापन खोदिया हो, आत्म समर्पण कर दिया हो, भीगते हुए पूरे तीन घंटे खड़ा होकर स्थान के अभाव में सभीने आपश्री के मुख से झरती रस गंगा का पान किया और अपने जीवन को सफल समझा । जैसे भगवान स्वामिनारायण प्रथम वार जब श्रीनगर पधारे उस समय झरोखों से देखने वाली महिलाये अपना सर्वस्व त्याग दी थी और कितनी तो सडक पर आ गयी थी, ठीक यही स्थिति पूज्या श्री गादीवाला की कथा की रस मंदाकिनी थी । सभी को अपने में आत्मसात करते हुए जब अमृतमयी वाणी का बरसात की और कही कि यह सत्संग ही हमारा परिवार है, इस परिवार के आगे हम अपना परिवार तथा आत्मीयजन, रिस्तेदार सब भूल गये है । "सबसे ऊची प्रेम सगाई" । प्रेमानंद स्वामीने कीर्तन में गया है कि -

जोया शेरियो शेरीए श्रीनगरनी चड़ी
झरोखे जोवा सारु
प्याराने पुरनी भामीने रे जोया ।

इस प्रकार की कवि कल्पना को साकार करदेनेवाली पूज्याश्री की वाणी स्त्री सत्संगी महिला की जीवन शैली को झकझोर कर रखदिया और एकक्रांन्ति पैदा हो गयी जिससे परिवर्तन लोगो में देखने मे मिला "भूतो न भविष्यति" की स्थिति इस कथा में थी, एकनयी दिशा, एक नयी प्रेरणा, एक नई क्रान्ति थी यही स्म सदैव बना रहे ऐसी भगवान नरनारायणदेव के चरणों मे प्रार्थना ।

- सां. मंजूबा, भारतीबहन हवेली

छपैया श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक मास का उत्सव

सर्वोपरि तीर्थ छपैया धाम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा लक्ष्मीस्वस्मा गादीवाला जब दर्शनार्थ पदार्पण की थी तब गुजरात, कच्छ, सौराष्ट्र, मुम्बई, उड़ीसा, धनवाद इत्यादि स्थलों से हरिभक्त लोग दर्शन हेतु पधारे हुए थे । उस समय भगवान, तथा महाराजश्री के दर्शन का लाभ प्राप्त कर धन्य हो गये थे ।

यहाँ पर वयोवृद्ध ब्रह्मचारी स्वा. रामकृष्णानंदजी की प्रेरणा से महंत ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से कथा वक्ता हरिस्वस्मानंदजी तथा स्वा. हरिप्रकाश-दासजी तथा स्वा. भक्तिप्रकाशदासजी एक मास पर्यन्त अलग अलग कथावार्ता करके सभी को लाभ दिया । अधिकमास के मुख्य यजमान गं.स्व. रंजनबहन धोडकिया परिवार (बम्बई) तथा सहयजमान मुम्बई की महिला मंडल ने लाभ लिया । ता. १८-७-०४ से श्रावण शुक्ल-१ से श्रावण वद अमावास्या तक एक महीने तक अलग अलग यजमानों द्वारा उत्सव संपन्न किया गया । जिसका दर्शन अत्यन्त अलौकिक था । पू. महंत स्वा. वासुदेवानंदजी के संत मंडल ने एक मास तक सेवा कार्य करके अधिकमास के उत्सव का और ही देदीप्यमान कर दिया था । *- म.स्वा.ब्रह्मचारी वासुदेवानंदजी*

कांकरिया मंदिर में अधिक मासमें मारुति याग

अधिक मास में श्रावणवद अमावास्या के दिन ता. १४-८-०४ के दिन कष्ट भंजन देव के सांनिध्य में प.पू. आचार्य महाराजश्री कीआज्ञा से पू. महन्त स्वा.की प्रेणा से मास्ती यज्ञ का आयोजन किया गया । प्रातः ६-३० बजे कष्टभंजन देव का महाभिषेक ८-३० छप्पन भोग, प्रातः ९-३० से ११-३० तक तथा सांय ४ से ५-३० तक यज्ञ विधि सम्पन्न हुई ।

अधिक श्रावण वद अमावास्या के दिन मंदिर की सभा मंडप में समूह महापूजा संपन्न हुई । प्रभु का हिंडोला दर्शन दिव्य ढंग से सम्पन्न किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य माहाराजश्री पदार्पण करके ठाकुरजी को झूले में झुलाया था । अहमदाबाद मंदिर संत भी साथ पधारे थे ।

- परेश भगत

धोलका मंदिर में अधिकमास में हिंडोला दर्शन

श्रीहरिने जिसे अपने बाहों में भरकर प्रतिष्ठित किया ऐसे मुरली मनोहरदेव, श्रीहरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से महन्त स्वामी जगत्प्रकाशदासजी एवं विष्णुप्रसाद दासजी की प्रेरणा से युवक मंडल के सहयोग से धोलका के श्रद्धालु हरिभक्तों के यजमान पद पर सुन्दर हिंडोला का दर्शन प्राप्त हुआ ।

- कोठारी मनु भगत

नारायणघाट मंदिर में अधिक मास में दिव्यलाभ

साबरमती के तट पर बना हुआ दिव्य अलौकि तीर्थभूमि नारायणघाट मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महन्त स्वा. देवप्रसाद दासजी तथा महंत घनश्यामप्रसाददासजी की प्रेरणा से २२-७-०४ से ३१-७-०४ तक श्रीमद् सत्संगीभूषण कथा, हीर का हिंडोला, हिमालय दर्शन, सावन भादों अमरनाथ दर्शन, इत्यादि सम्पूर्ण मास पर्यन्त चलता रहा । जिसका दर्शन करके भक्तलोग आनन्दित हुए । प.पू. महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री पधारकर खूब प्रसन्न हुए । *- मुक्तराज स्वामी*

बावणा मंदिर में अधिक मास का उत्सव

बावणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पूज्य ध्यानी स्वामी की प्रेरणा से महंत स्वामी भक्तवत्सलदास ने अधिक महीने में हिमालय का दर्शन ता. ९-८-०४ से दर्शनार्थ खोलदिया गया था । श्रीहरि के वनविचरण का दर्शन कर सभी आनन्दित हुए । *- को. गुणवन्त भाई*

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिकमास में वार्षिक उत्सव मनाया गया । पंडित मुकेश शास्त्री के वक्तापद पर श्री आनंद स्वरूप अग्रवाल शेठ के यजमान पद पर श्रीमद् भागवत पारायण का आयोजन किया गया । स्थानिक धर्मप्रेमी, आगन्तुक यात्री लोग इसका लाभ लिये । पुजारी स्वा. सर्वेश्वरदासजीने सुन्दर सेवा की ।

- महन्त शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी

सिद्धपुर मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर में धर्म-भक्ति श्रीहरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वा. भक्तिप्रियदासजी की प्रेरणा से पुरुषोत्तम मास में नाना प्रकार के उत्सव किये गये । तुलसी विवाह के यजमान भीखाभाई मांडलिया थे । समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया । संतोने खूब सेवा की ।

- स्वामी चन्द्रप्रकाशदास

प्रांतीज मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी माधवप्रसाददासजी की प्रेरणा से अधिक मास पर्यन्त कथा, प्रवचन, देवदर्शन एवं भागवत का आयोजन किया गया । यजमान पद पर प.भ. चन्द्रकलावहन मंगलप्रसाद थी । वक्ता स्वा. हरिजीवन-दासजी थे । प.भ. बाबुभाई ३५ वर्ष तक मंदिर में सेवा का कार्य किया जिनका संमान किया गया । अनेक संत हिरभक्तों ने उनकी सेवा की प्रशंसा की । *- महन्त स्वा. आनंदजीवनदासजी हिंमतनगर*

हिंमतनगर मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ६-८-०४ को प.पू. आचार्य महाराजश्री सत्संग सभा में पधारे थे एवं ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में विराजे थे । सन्त हरिभक्तं ने दर्शन का लाभ लिया था । श्री नरनारायणदेव यु.मं.ने सुन्दर सेवा की थी । *- महंत स्वामी*

उनावा मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा में प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से महंत स्वामी हरिवल्लभदासजी की प्रेरणा से अधिकमास में उत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ । कथा शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीने किया । सभी ने कथा का लाभ लिया । *- परेश भगत*

श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय शुभेच्छा मुलाकात में पधारे थे प.पू. लालजी महाराजश्री

आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री स्थापित श्री स्वामिनारायण सं.म.वि. में जहाँ विद्यार्थी विद्याभ्यास कर रहे है वहाँ पर प.पू. लालजी महाराजश्री उपस्थित होकर सभी को मातृवत्सलता का एहसास कराया सभी आनन्दित हुए-कृत कृत्य हो गए । जैसे दूर कहीं पढने गये छात्रों को माता पिता मिलने जाते हैं और उनसे मिलकर जो आनंद की अनुभूति होती हो ठीक ऐसी स्थिति पू. लालजी महाराज के आने पर सभी को हुई । अपने माता, पिता, गुरु सभी स्वजनो का त्याग कर संस्कृतानुरागी संतवृन्द को जब लालजी महाराजश्री की संनिकटता मिली तो सभी धन्यता का अनुभव किया । पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से प्रेरणा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा. स्वामी आत्यकप्रकाशदासजी, पू. पी.पी. स्वामी, महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में सन्त विद्यार्थीयों द्वारा विविधकार्यों की समरेखा

देखकर खूब प्रसन्न हुए थे । छोटे-छोटे विद्यार्थी संतोने अद्‌भूत प्रवचन किये थे । कालुपुर स्वा. मंदिर के महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी प्रसंगोचित प्रवचन किये थे । प.पू लालजी महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि विद्वता के साथ साधुता को प्राप्त करके सत्संग समाज को आपलोग उपयोगी बनो, ऐसी भगवान नरनारायणदेव को प्रार्थना है । अंत में संतो द्वारा बनाया गया प्रसाद खाकर आनंदित हुए । वर्तमान में कुल ६० संख्या विद्यार्थीयों की है । शुक्ल एकादशी से कृष्ण एकादशी, हरिजयन्ती तथा शनिवार, रविवार, को नीचे के गाँवों में ८-३० से १०-३० तक सत्संग सभा की गयी । जिससे हरिभक्त खूब प्रसन्न हुए पू. महाराजश्री तथा लालजी महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी द्वारा सत्संग में नाना विध प्रवृत्तिया हो रही है ।

पिंगणाज, महीजडा, नवागांव, कलोली, बारेजा, नारायणनगर, मलातज, मछीज, बदरखा, भात, काशीन्द्रा, चलोडा, नाझ, मिरोली, बसई, पालडी, कांकज, जीवराजपार्क सेटेलाईट, वाडज, मेघाणीनगर, असलाली, गामडी, वासणा वडाला, मनीपुर, साणंद, खेडा, गोधावी, भाउपुरा इत्यादि गाँवो में सभा हुई थी । - *संचालक श्री शा.स्वा. हरिओमप्रकाशदासजी*

एप्रोच मंदिर (बापूनगर)

प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से तथा लक्ष्मण स्वामी की प्रेरणा से अधिक मास मे कलात्मक ढंग से हिंडोले का दर्शन हरिभक्तों ने किया । ता. ७-८-०४ को समूह महापूजा के अवशर पर प.पू. महाराजश्री पधारे थे, सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे साथ में महन्त स्वामी भी पधारे थे ।

एप्रोच श्री स्वामिनारायण मंदिर (शिखरबद्ध) में मूर्ति प्रतिष्ठा के विषय में

श्री नरनारायणदेव देश के पूर्व विस्तार में अहमदाबद में प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से नूतन शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण पूर्ण होने वाला है । आगामी मार्च २-३-२००४ को मूर्ति प्रतिष्ठा निश्चित हो गयी है । जिसमें श्री नरनारायणदेव तथा घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा की जायेगी । इस प्रसंग के यजमान बनने के इच्छुक एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी का सम्पर्क करें : फोन : २२७४९०८४ महापूजा विधि श्री गोपालभाई शास्त्रीने करायी । - *गोरधनभाई सीतापरा*

कर्मशक्ति मंदिर

प.पू. आचार्य महाराश्री की आज्ञा से तथा भक्ति नंदनदासजी प्रेरणा से अधिक मास में ता. ८-८-०४ को विष्णुयाग, समूहमहापूजा, सत्संग सभा का आयोजन प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी शुभ उपस्थिति में सम्पन्न हुआ । कोटेश्वर के पी.पी. स्वामीने सभा संचालन किया । प.पू. महाराजश्री का दर्शन करके सभी धन्य हो गये । - *गोरधनभाई सीतापरा*

गोमतीपुर मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १-८-०४ को सायंकाल ८ से १० बजे तक भव्य सभा का आयोजन किया गया । इस प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । संतो ने भगवान की महिमा बताई थी । समस्त सभा को महाराजने आशीर्वाद दिया था ।

- *श्री नरनारायणदेव युवक मंडल*

मीठाखड़ी श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य महंत स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से अहमदाबाद मीठाखडी में ११५ वर्ष के पुराने स्वा. मंदिर में हरिभक्तं तथा श्री न.ना.देव युवक मंडल के सहयोग से कथावार्ता धुन, कीर्तन, संत हरिभक्तों ने किया । यहाँ पर प्रति गुरुवार को रात्रि में ८-३० से १०-३० तक सत्संग सभा होती है । संपर्क श्री नंदुभाई - ९८२४४५०२२९, विनोदभाई - २२१४१४०० ।

मोडासा मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से शा.स्वा. हरिजीवनदासजी तथा शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी अधिकमास में दशमस्कंध तथा सत्संगिभूषण की कथा का रसपान कराये । - *प्रजापति कांतिलाल*

शहेरा में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव यु.मं. द्वारा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से नरनारायणदेव युवक मंडळ की रचना की गयी तथा संचालक की नियुक्ति की गयी बाद में सत्संग सभा संपन्न हुई ।

- *अश्विनभाई कोठंबा*

गोधावी ता. साणन्द

प.पूज्या अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर(वहेनो का) में अधिक मास में प्रतिदिन प्रभातफेरी धुन, कीर्तन, सत्संग सभा का आयोजन किया गया ।

करवीरनगर कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

मंदिर निर्माण हेतु सत्संगिजीवन की कथा का आयोजन किया गया । १-८-०४ से ७-८-०४ तक धरियावद मंदिर के महन्त शा.स्वा. ईश्वरजीवनदास ने कथा की । यजमान पद पर पटेल इन्टरप्राईज मुंबई (मेतपुरवाला) के यजमान पद पर संपन्न हुई । इस कथा का लाभ सभी ने लिया । - *श्री स्वा.स.मं. कोल्हापुर*

हेबतपुर ता. विरमगाम

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से विरमगाम श्री न.ना.यु.मं. द्वारा सत्संग

सभा का आयोजन किया गया। शा.स्वा. छपैयाप्रसादजी तथा युवक मंडलने पवित्राएकादशी के दिन भजन, कीर्तन, धुन इत्यादि का कार्यक्रम किया था। श्रीहरि के समकालीन स.गु. पूर्णानंद स्वामी की स्मृति में उनके पूर्वाश्रम के वंशजभी सभा का लाभ लिये।

- शा. छपैयाप्रसाद

ध.धु. आचार्य श्री देवेन्द्रप्रसादजी केणवडी ट्रस्ट का शैक्षणिक समाचार

श्री सहजानंद प्राथमिक विद्या मंदिर (गुजराती माध्यम) का गौरव। अहमदाबाद शहर तथा जिला कक्षा स्तर पर आयोजित स्वीमिंग स्पर्धा में सुथार लता उमेसबाई ६+१०० मी. बेकस्ट्रोक में प्रथम तथा पटेल निधि नरेन्द्रभाई (७अ) २०० मी. बेक स्ट्रोक में प्रथम स्थान प्राप्त की। १५ अगस्त को आयोजित गुजरात राज्य कला शिक्षक संघ स्पर्धा में अहमदाबाद शहर में से (अपने स्कूल की कक्षा-४) प्राची प्रकाशकुमार शाह प्रथम स्थान प्राप्त की। जो श्री सहजानंद स्कूल (गुजराती माध्यम) को प्रि. श्री सुरेखाबहन के मार्गदर्शन से विद्यार्थियों यश भागी बने हैं। विद्यार्थीयों की उत्तरोत्तर वृद्धि हेतु प.पू. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देते हैं।

मकारवाड मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मकारवाड में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वा. गोपालदासजी की स्मृति में राम स्वामी (विद्याधाम हाथीजण) के मार्गदर्शन में चौधरी परिवार के हरिभक्तों ने ता. २४-७-०४ से ३०-७-०४ तक सत्संगिजीवन की कथा स्वा. श्रीजीप्रकाश द्वारा करायी। कथा की पूर्णाहुति पर प.पू. आचार्य महाराजश्री पदार्पण किये थे। सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

- चौधरी काणाभाई छगनभाई

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य हिंडोला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मास में श्रीहरि कृष्ण महाराज समक्ष तथा हवेली में प्रतिदिन हिंडोला का दर्शन कराया गया। महंत स्वा. मुकुन्दप्रसाददासजी तथा जयप्रकाशदासजी की प्रेरणा से सुन्दर आयोजन किया गया।

- निलेश गज्जर

देरायारी रणजीतगढ ता. हळवद

प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से ता. १६-८-०४ के दिन सत्संग सभा का आयोजन किया गया। जिसमें श्रीजी, विश्वविहारीदास, स्वा. भक्तिविहारीदास आदि संतोने श्रीहरि की महिमा बताई और गाँव प्रसादी का है उसकी महिमा बताई। अगल बगल के हरिभक्तों ने लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया।

- तारबुंदिया रमेशकुमार

विदेश सत्संग वृत्तान्त

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिंग्टन I.S.S.O. चेप्टर)

३१ जुलाई शनिवार सायंकाल ३वजे नियमित सभा का धुन का आयोजन किया गया। हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित रहे प.पू. महाराजश्री की तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग उत्तम चल रहा है।

- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर बामरोली (मध्यप्रदेश) का फोन नं. बदल गया है (०७५३२) २४०८७५

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमदावाद नारायणपुरा : प.भ. हीराभाई जोईताराम पटेल (उमा ट्रांसपोर्ट वाला) श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए। संप्रदाय में तथा नरनारायणदेव देश में उनकी खूब सेवा थी। उनके अक्षरवास से संप्रदाय में कमी हुई है।

माणसा : प.भ. कनैयालाल रमणळाल मोदी ता. २७-७-०४ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

मोडासा : प.भ. फताभाई छबाभाई सगर ता. १७-८-०४ को श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए। उनके अक्षरनिवासी से भी कमी हुई है।

मेधाणीनगर : प.भ. जादवभाई देवशीभाई बाबरिया ता. २५-७-०४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवास हुए।

गोधरा - पंचमहाल : श्री स्वामिनारायण मंदिर (टावरवाला) पुजारी पा. जसवंत भगत गुरु अ.नि.स्वा. कृष्णकेशवदासजी ता. ५-८-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

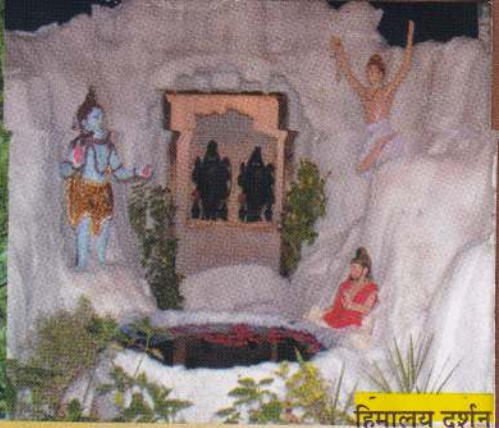
गोधरा : श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोंका) पुजारी सांख्ययोगी भीखी बहन गुरु अ.नि. दीवाली बा ता. ४-८-०४ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासिनी हुई।



मन दर्शन



कुंजगली दर्शन



हिमालय दर्शन



ग्वालबाल दर्शन



शिक्षापत्री जयंती उत्स



फूलका हिंडोला

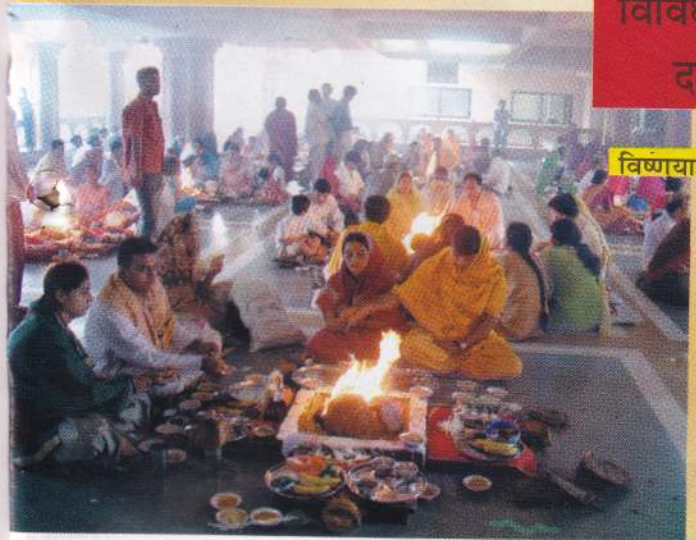


ाक्षोत्सव दर्शन

अहमदाबाद
मंदिर
अधिक मासमें
विविध उत्सव
दर्शन



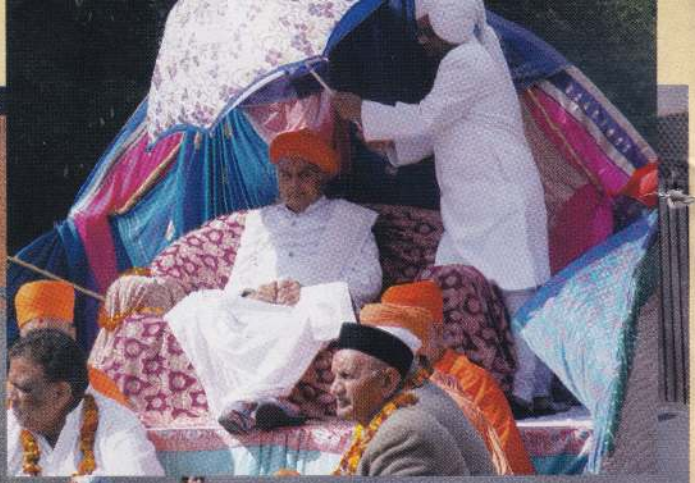
छपैया दर्शन



विष्णुयाग दर्शन



लेस्टर (U.K., I.S.S.O.) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित विशाल भव्य शोभायात्रा में दर्शन देते हुए पू. महाराजश्री ।



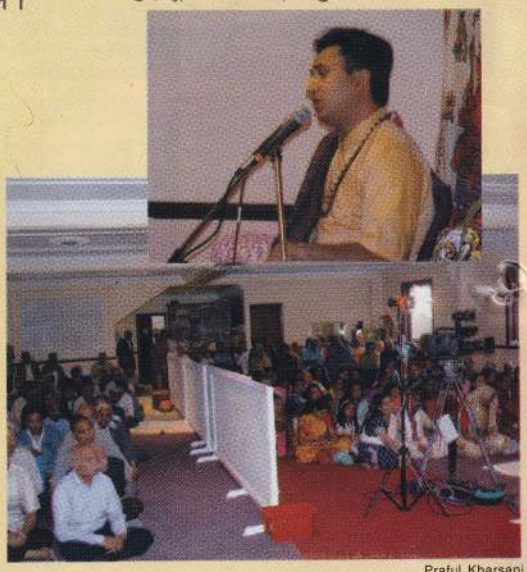
લેસ્ટર (યુ.કે. ISSO) મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે આયોજીત વિશાળ ભવ્ય શોભાયાત્રામાં દર્શન આપતાં આપણા પૂ. મહારાજશ્રી

लेस्टर मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के मुख्य यजमान प.भ. हरीशभाई गोविंदभाई पटेल ।

लेस्टर मंदिर में कथामृत पान कराते हुए पू. योगेन्द्रभाई भट्ट ।



ओल्डहाम में पू. महाराजश्री के कृपापात्र प.भ. हरिशभाई भूडिया के यहाँ प पू. आचार्य महाराजश्री पदार्पण किये । (जो षष्ठि पूर्ति ज्ञानयज्ञ पारायण के सहयजमान थे)



Praful Kharsani